₹15/-

वर्ष 43 • अंक 1 • जनवरी 2016

₹15/-

नव वर्ष मंगलमय हो

हंसती दुनिया

मैं युकलिप्टस बोलता हूँ • आ गया है नया साल • दादा जी • गणतंत्रा दिवस • किट्टी
पानी में छिपे हैं भयंकर शैतान • गुरु सेवा का फल • कभी न भूलो • समुद्री गाय

हँसती दुनिया

• वर्ष 43 अंक 1 • जनवरी 2016 • पृष्ठ 52
बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य संपादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries
Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4 सबसे पहले
5 सम्पूर्ण अवतार बाणी
10 कभी न भूलो
16 समाचार
18 वर्ग पहेली
43 जन्मदिन मुबारक
44 पढ़ो और हँसो
47 आप के पत्र मिले
48 रंग भरो परिणाम

चित्रकथाएं

12 दादा जी
34 किट्टी

कहानियां

7 **गुरु सेवा का फल**
: नित्या त्रिपाठी

18 **रेखा बदल डाली**
: विद्या प्रकाश

21 **मैं यूकलिप्टस बोलता हूँ**
: नीला राजपूत

25 **तीखी मिर्ची**
: रेनू सैनी

30 **भय**
: गौरी शंकर कुमार

32 **जन्मभूमि की महिमा**
: राजकुमार जैन 'राजन'

41 **जिद्दी कबूतर**
: शोभा माथूर

कविताएं

6 **आ गया है नया साल**
: गफूर 'स्नेही'

11 **गणतंत्र दिवस**
: मोती 'विमल'

19 **अधिकार और कर्तव्य**
: डॉ॰ परशुराम शुक्ल

24 **नेताजी का नाम अमर**
: राजन श्रीवास्तव

29 **भारत है सबसे न्यारा**
: नवीन चतुर्वेदी

45 **नई सुबह**
: रामानुज त्रिपाठी

46 **दो बाल कविताएं**
: हरजीत निषाद

विशेष / लेख

9 **समुद्री गाय**
: किरण बाला

20 **आओ बर्फ के घर की सैर करे**
: ईलू रानी

27 **जंगल का राजा**
: कमल सौगानी

28 **बर्फ की चादर वाला देश**
: ईलू रानी

30 **बर्फ में बेफिक्र बकरी**
: विद्या प्रकाश

31 **विज्ञान प्रश्नोत्तरी**
: घमण्डीलाल अग्रवाल

38 **पानी में छिपे भयंकर शैतान**
: संजीव कुमार आलोक

समय का सद्उपयोग करें

परीक्षा देने के पश्चात् परीक्षा भवन के बाहर दो विद्यार्थी अपने किए हुए प्रश्न–पत्र के बारे में चर्चा कर रहे थे। एक बोला– पेपर तो अच्छा था लेकिन अगर एक दिन तैयारी का और मिल जाता तो बहुत ही अच्छा होता।

इस पर दूसरा बोला– अरे, दो–चार घंटे भी और मिल जाते तो पेपर बहुत ही अच्छा होता।

इन बातों को सुनकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि परीक्षा का दिन और समय तो काफी पहले से ही निश्चित हो जाता है। इसलिए उनको उसी निश्चित समय के अन्दर ही अपनी तैयारी पूरी करनी चाहिए थी। अगर निश्चित समय के अन्दर ही अपना कार्य ईमानदारी, परिश्रम और पूरी लगन से किया जाता तो यह बात करने की आवश्यकता ही नहीं रहती।

यह अवस्था उन विद्यार्थियों की ही नहीं बल्कि हम सबकी किसी न किसी समय अवश्य होती है। व्यापार में, समाज में, घर के कार्य में, यात्रा या सफर में और लगभग हर क्षेत्र में समय का जिक्र अवश्य होता है कि समय कम रह गया या कम पड़ गया।

आज प्रतिस्पर्धा एवं भागदौड़ के युग में इस बात का सामना लगभग हर व्यक्ति को करना पड़ रहा है। इसका एकमात्र कारण यह है कि हम अनुशासित होकर या योजना बना कर कार्य नहीं करते बल्कि अपनी सुविधानुसार कार्य करना पसन्द करते हैं। सुविधापूर्वक जीने के लिए हम उन सभी साधनों का उपयोग करते हैं जिससे सुविधा मिल सके। फिर भी हम इतने सहज और सरल नहीं हो पाते और तनाव में आ जाते हैं।

आज ध्यान देने का विषय यह है कि हमें हर कार्य को योजनाबद्ध ढंग से करने का संकल्प लेना चाहिए और उसे अनुशासित तरीके से करने का प्रयास करना चाहिए। इससे हम सहज में ही सुविधापूर्वक रहकर, बिना तनाव के हर कार्य को पूर्ण कर सकते हैं।

वर्ष 2016 ने हमें यह तोहफा भी दिया है कि इस वर्ष में 365 दिन नहीं बल्कि 366 दिन होंगे। सभी कहते है कि हमें समय नहीं मिलता परन्तु इस बार हमें पूरा एक दिन अर्थात् 24 घंटे या 1440 मिनट उपहार में मिले हैं। यह उपहार सबके लिए है जिनके पास समय की कमी थी उनकी कमी को पूरा करने के लिए। चाहे वह विद्यार्थी को तैयारी करने के लिए, व्यापार, यात्रा, घर–बाहर के कार्य हो या किसी रूठे को मनाने का। इस समय का सद्उपयोग हमें अपने–अपने तरीके से अवश्य करना है।

हँसती दुनिया परिवार की ओर से सभी को नववर्ष 2016 मंगलमय हो।

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 128

मनमुक्खां दी एहो निशानी माया विच रहन्दे ग़ल्तान।
मनमुक्खां दी एहो निशानी पूजण जेहड़े मढ़ी मसान।
मनमुक्खां दी एहो निशानी कंचन कामिनी पिच्छे मरदे।
मनमुक्खां दी एहो निशानी दिन ते रातीं चट्टी भरदे।
मनमुक्खां दी एहो निशानी हौमैं दे विच रहन्दे चूर।
मनमुक्खां दी एहो निशानी साधजनां तों रहन्दे दूर।
मनमुक्खां दी एहो निशानी सुत दारा नाल करदे प्यार।
मनमुक्खां दी एहो निशानी विस्सर जांदे ने निरंकार।
दुखां मारया मनमुख हर दम करदा रहन्दा हाल पुकार।
कहे अवतार जुआरी वांगूं जनम अमोलक जांदा हार।

भावार्थ :

उपरोक्त शब्द में बाबा अवतार सिंह जी मनमुख की निशानियां बताते हुए कह रहे हैं कि मनमुख वह इन्सान है जिसका मुख मन की ओर होता है। वह केवल अपने मन के कहे अनुसार चलता है। मनमुख की यही निशानी है कि वह हमेशा माया में लिप्त रहता है। वह धन–दौलत, मान–ऐश्वर्य की चाह में डूबा रहता है। संसार के इन्सान जो माया और मन के अनुसार चलते हैं वे मनमुख हैं और जो गुरु की ओर अपना मुख रखते हैं, वे सही राह पर चलते हैं वे गुरुमुख हैं। मनमुख माया (भौतिक पदार्थों) की चाह में मढ़ी–मशानों की पूजा करते हैं अर्थात् अन्धविश्वास और रूढ़िवाद में फंसकर पिशाची और मायावी शक्तियों की पूजा करते हैं जिससे वे नुकसान उठाते हैं।

मनमुख अहंकार में चूर रहते हैं और दिन–रात व्यर्थ के कार्य अर्थात् माया के दरबार में बंधुआ मजदूरों की तरह बेगार में जुटे रहते हैं। वे ऐसे कार्य में लगे रहते हैं जिससे उन्हें कोई लाभ नहीं होता।

मनमुखों की यह निशानी भी है कि वे पत्नी–पुत्र आदि से ही प्यार करते हैं और साधुओं से दूर रहते हैं। सन्तों का संग उन्हें प्रिय नहीं लगता। इन्हीं कारणों से मनमुख निरंकार प्रभु–परमात्मा को भूलकर माया में ही खोया रहता है। जिसके कारण मनमुख दुख–पीड़ा से घिरे रहता है और हरदम चीख पुकार करता रहता है।

जिस प्रकार जुआरी जुए में धन–दौलत हार जाता है उसी प्रकार मनमुख भी अपना सारा जीवन ही हार कर एक दिन संसार से रवाना हो जाता है।

यहाँ बाबा अवतार सिंह जी इन्सान को मनमुख से गुरुमुख बनने की प्रेरणा दे रहे हैं ताकि इन्सान समय रहते समझ जाए और अपनी जीवन बाजी हार कर नहीं बल्कि जीत कर मुख उज्ज्वल करके संसार से जाएं।

बाल कविता : गफूर 'स्नेही'

आ गया है नया साल

आ गया है नया साल,
उठाता अपना है भाल।
मुस्काता मस्तानी चाल,
उपहार ढेर सारे संभाल।

बच्चों में है उल्लास,
नयेपन का अहसास।
कभी निराशा न मन में,
भरा हुआ नया विश्वास।

अपनी धरती आकाश विशाल,
आ गया है नया साल।

चारों तरफ डालो नजर,
हर तरफ चित्र सुन्दर।
चिड़िया खूब उड़े डोले,
अम्बर में हौले–हौले।

मस्त मजे की बोलचाल,
आ गया है नया साल।

धूप धुली हवा महकती,
बागों में है कलियां खिलती।
तितली गाती नया तराना,
भौरा गाता दिल से गाना।

गीत गजल लय है ताल,
आ गया है नया साल।

बधाई के दौर चले,
लोग मिल रहे गले।
दिल से गर दिल मिले,
उनसे बढ़के कौन भले।

एकता समता की मिसाल,
आ गया है नया साल।

प्रेरक कथा : नित्या त्रिपाठी

गुरु सेवा का फल

प्राचीन काल में महर्षि आयोद धौम्य नाम के एक सम्मानित गुरु थे। उनके शिष्य का नाम था 'उपमन्यु'। उपमन्यु अत्यन्त प्रतिभावान व शरीर से हृष्ट–पुष्ट बालक था। वह ऋषि के आश्रम की गायें चराने व रखवाली का कार्य करता था। उस समय का यह नियम था कि बालक को आश्रम में रहते हुए गुरु सेवा करनी होती थी। वह नगर व ग्राम से भिक्षा लेकर गुरु को देता तब गुरु उसमें से जो भी दे दे, वह खाकर सन्तुष्ट रहना होता था।

बालक उपमन्यु भी आश्रम की आचार संहिता का पालन करता था लेकिन वह जो भी भिक्षा माँगकर लाता, वह धौम्य ऋषि अपने पास रख लेते। उपमन्यु को उसमें से कुछ भी खाने को न देते थे। बेचारा उपमन्यु कुछ कहता भी नहीं था।

एक दिन धौम्य ऋषि ने उपमन्यु से पूछा, "मैं तुम्हारे द्वारा लायी भिक्षा का सम्पूर्ण भाग रख लेता हूँ। ऐसी स्थिति में तुम क्या खाते हो? तुम्हारा शरीर तो हृष्ट–पुष्ट दिखाई देता है।"

उपमन्यु बोला, "गुरुदेव! मैं दुबारा भिक्षा माँगकर अपना काम चला लेता हूँ।"

"यह काम तो तुम अच्छा नहीं करते। इससे नगर के गृहस्थों को भी संकोच होता है, फिर दूसरे भिक्षार्थियों के जीविकाहरण का पाप होता है।" ऋषि ने कहा।

उपमन्यु ने यह बात स्वीकार कर ली कि वे दुबारा ऐसा पाप नहीं करेंगे। कुछ दिन बीतने के बाद एक दिन गुरु जी ने उपमन्यु से फिर पूछा, "आजकल तुम क्या भोजन ले रहे हो?"

उपमन्यु ने कहा, "भगवन्! मैं गाय का दूध जंगल में चराते समय पी लेता हूँ।"

अब तो धौम्य जी गुस्सा हो गए। उन्होंने कहा, "आश्रम की सभी गायें मेरी हैं, मेरी आज्ञा के बिना इनका दुग्धपान करना पाप है।"

उपमन्यु ने दूध पीना भी बन्द कर दिया। कुछ दिन पश्चात् जब एक बार फिर ऋषि की भेंट उपमन्यु से हुई तो उपमन्यु ने बताया कि "वे बछड़ों के मुख से गिरा फेन पी लेते हैं।"

गुरुदेव ने कहा, "ऐसी भूल अब आगे से न करना। बछड़े दयालु होते हैं। वे तुम्हारे लिए अधिक फेन गिरा देते होंगे और स्वयं भूखे रह जाते होंगे।"

अब उपमन्यु के भोजन के सभी रास्ते बन्द हो गये। गायों के पीछे दिनभर जंगल में दौड़ना और कुछ भी नहीं खाने से वह तड़पने लगा। एक दिन उसने 'आक' के पत्ते खा लिए। उन विषैले पत्तों की गर्मी से उसकी आँखों की रोशनी चली गई। वे अन्धे हो गए। दिखाई न पड़ने के कारण जंगल में घूमते समय एक जलहीन कुएं में गिर गये।

सूर्यास्त के समय बिना चरवाहे के गायें आश्रम को लौट आईं परन्तु उपमन्यु नहीं लौटे। गुरुदेव चिन्तित हो उठे– "मैंने उपमन्यु का भोजन बन्द कर दिया। इसी से वह शायद कहीं नाराज होकर चला गया?" शिष्यों के साथ उसी समय वे जंगल की ओर चल दिये और पुकारने लगे, "बेटा उपमन्यु! तुम कहाँ हो?"

उपमन्यु का स्वर सुनाई दिया, "गुरु जी! मैं यहाँ हूँ। इस कुएं में पड़ा हूँ।"

ऋषि कुएं के पास गये। उपमन्यु ने उनके पूछने पर कुएं में गिरने का कारण बता दिया। तब गुरुदेव ने उपमन्यु से देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमारों की प्रार्थना करने का आदेश दिया। गुरु की आज्ञा से उपमन्यु ने अश्विनीकुमारों की प्रार्थना की। एक भक्त बालक प्रार्थना करे और देवता प्रसन्न न हों, ऐसा कैसे हो सकता है।

अश्विनीकुमार कुएं में ही प्रकट हो गए और उपमन्यु से कहा, "बेटा! हम तुम्हारी प्रार्थना सुनकर यहाँ आए हैं। यह मीठापुआ खा लो।"

उपमन्यु बोला, "प्रभु! बिना गुरुदेव को अर्पण किए मैं यह पुआ नहीं खा सकता।"

"अश्विनीकुमारों ने कहा, "तुम्हारे गुरु ने पहले ही हमारी प्रार्थना कर ली थी और हमारा दिया हुआ पुआ अपने गुरु को अर्पण किये बिना खा लिया था। अतएव तुम भी ऐसा ही करो।"

"उपमन्यु बोला, "गुरुजनों की गलती शिष्यों को नहीं देखनी चाहिए। कृपया आप लोग हमको क्षमा कर दें, गुरुदेव को अर्पित किये बिना मैं कुछ भी नहीं खा सकता।" →

जानकारी : किरण बाला

समुद्री गाय

धरती पर विचरण करती गायें तो आपने देखी हैं, लेकिन शायद आप नहीं जानते कि समुद्र में भी गायें होती हैं। जिन्हें समुद्री गाय कहा जाता है। समुद्र में रहने वाला यह जीव बड़ा विचित्र है। धरती की गायों से इसका कुछ लेना–देना नहीं है। आकार में बड़ी ये गायें रफ्तार में बड़ी धीमी होती हैं।

समुद्री गायों के कमर के ऊपर के अंग नहीं होते और इसकी जगह क्षेत्रिय समतल पूंछ होती है। आगे के अंग फिलपर जैसे होते हैं। त्वचा चिकनी, बालविहीन होती है। वैसे इनकी चार किस्में होती हैं। पहले वर्ग में डुगोंग आती है तथा शेष तीन वर्ग में मैनाटीज आती हैं। किस्म के आधार पर इनके आकार में थोड़ी भिन्नता होती है जैसे डुगोंग की पूंछ दानेदार होती है। जबकि मैनाटी की गोल और पैडलनुमा। जहाँ तक डुगोंग किस्म की समुद्री गाय का प्रश्न है, वह हिन्द महासागर से लेकर आस्ट्रेलिया के उत्तरी किनारों तक मिल सकती है जबकि मैनाटी की तीनों किस्में उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका तथा पश्चिम अफ्रीका में पाई जाती हैं।

डुगोंग किस्म की समुद्री गाय की लम्बाई आठ से नौ फुट तक हो सकती है जबकि मैनाटी की लम्बाई 15 फुट देखी गई है। मैनाटी सुमद्री गाय का चेहरा आदमी से मिलता है और पूंछ मछली जैसी होती है। लोग इन्हें देख जलपरियों की कल्पना करने लगते हैं।

समुद्री गाय का मुख्य भोजन समुद्री घास है। दोनों ही प्रजाति की समुद्री गाय के चरने के तरीके भिन्न होते हैं। ये एक दिन में 50 किलोग्राम तक घास खा लेती हैं। इनके दांत गिरते रहते हैं और उनके स्थान पर नये दांत उग आते हैं।

→ अश्विनीकुमारों ने कहा, "तुम एक अच्छे गुरु के शिष्य हो। तुम्हारे गुरु के दाँत लोहे के हैं और अब तुम्हारे दाँत सोने के हो जायेंगे अर्थात् तुम अपने गुरु से अधिक प्रसिद्धि पाओगे। तुम्हारी आँखों में पहले की तरह रोशनी भी आ जाएगी।"

अश्विनीकुमारों ने उपमन्यु को कुएं से बाहर निकाला। तब उस शिष्य को गुरु आयोद धौम्य ने गले से लगा लिया और कहा, "मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। तुम सफल हुए। मैं तुम्हें सम्पूर्ण ज्ञान–शास्त्र का अध्ययन कराऊँगा और तुम्हें श्रेष्ठ ऋषि बनाऊँगा।"

बाद में उपमन्यु तत्वज्ञानी ऋषि के रूप में सुविख्यात हुए।

संग्रहकर्ता : विभा वर्मा (वाराणसी)

कभी न भूलो

- सत्य से कमाया गया धन हर प्रकार से सुख देता है। छल व कपट से कमाया धन दुख ही दुख देता है।
- काश! संसार के सभी इन्सानों को मिलजुल कर रहने का सलीका प्राप्त हो जाये।
- स्वार्थ में अच्छाइयां ऐसे खो जाती हैं जैसे समुद्र में नदियां।
- संसार में घृणा से अधिक शक्तिशाली प्रेम और क्षमा ही है।

—बाबा हरदेव सिंह जी

- यदि तुम अज्ञानता के कारण भगवान को नहीं देख सकते तो इसका कारण यह नहीं कि भगवान नहीं है। — रामकृष्ण परमहंस
- लक्ष्मी लालची आदमी को कभी नहीं मिलती। — मकबूल आलम
- मानव सेवा से बढ़कर कोई नैतिक नियम नहीं है।
- काम की अधिकता नहीं अनियमितता ही आदमी को मार डालती है।

— महात्मा गाँधी

- लोभी मनुष्य की कामना कभी पूर्ण नहीं होती। — वेदव्यास
- यदि तुम्हें जीवन से प्रेम है तो अपने समय को नष्ट मत करो क्योंकि जीवन उसी से मिला है। — फ्रैकलीन
- क्रोध की अवस्था में दस बार सोचकर बोलो। — डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
- मनस्वी वही है, जो बीते पर आँसू नहीं बहाता, भविष्य के लिए मनमोहक सपने नहीं संजोता, अपितु वर्तमान को ही दुधारू गाय की तरह दूहता है। — गेटे
- उल्लास का प्रमुख सिद्धान्त है स्वास्थ्य और सवास्थ्य का प्रमुख सिद्धान्त है कसरत। — टॉमसन
- संसार ही महापुरुष को ढूढ़ता है न कि महापुरुष संसार को। —कालीदास
- विश्वास शक्ति है। — राबर्टसन

कविता : मोती 'विमल'

गणतन्त्र दिवस

जीने का हो एक मन्त्र,
राष्ट्र हमारा रहे स्वतन्त्र।

गणतन्त्र दिवस को पहचानें,
महत्ता इसकी हम जानें,
याद करें कुर्बानी को,
देश हित मिटी जवानी को,
अमर रहे ये गणतन्त्र...

हर वर्ष मनायें ऐसे पर्व,
करें निरन्तर जिसपे गर्व,
घर–घर हर बच्चा हर्षाये,
पुलकित होकर पर्व मनायें।
सफल तभी हो जनतन्त्र...

राष्ट्र ध्वज को फहरायें,
नील गगन में लहरायें,
नमन करें शहीदों को,
रखें दूर विवादों को।
सच्चा होगा लोकतन्त्र...

मिल सभी जन काम करें,
आजादी हित त्याग करें,
जन–जन की भागीदारी हो,
सबकी जिम्मेदारी हो।
राम राज्य हो प्रजातन्त्र...

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

दादाजी धूप में बैठे सोच रहे थे कि आज बच्चे कहाँ रह गये।

हम सबने मिलकर पार्टी की। पैसे कम पड़ गये, तो हमने दुकानदार से समान उधार ले लिया।

दादाजी अब कहानी सुनाओ।

दादाजी नमस्ते।

बच्चों ! कहाँ थे अभी तक और इतना शोर क्यों?

यह सुनते ही दादाजी बहुत खुश हुए।

बच्चों सुनो आज मैं तुम्हे एक खलीफा की कहानी सुनाता हूँ।
खलीफा एक न्याय प्रिय व नेक इन्सान थे। उन्होंने अपने ही शाही खज़ाने से निश्चित पगार मुकर्रर कर रखी थी।
एक दिन खलीफा की बेगम ने निवेदन किया, कि तीन दिन की पगार अगर आप पहले ला दें तो ईद पर बच्चों के लिये नये कपड़े बन जाएंगे।
खलीफा पूरे दिन राजकार्य देखते और शाम को अपने काम के बदले सरकारी खज़ाने से तीन मुहरें ले जाते। घर खर्च की तुलना में वह रकम काफ़ी कम थी।

बेगम का निवेदन सुन खलीफा ने जवाब दिया।
तुम्हारी माँग उचित है।
परन्तु मैं कल तक जीवित नहीं रहा तो राज्य का कर्ज़ कौन चुकाएगा।
पहले तुम खुदा से मेरी ज़िंदगी के तीन दिनों का पट्टा लिखवा लाओ। उसके बाद मैं तीन दिन की पगार उधार ले आऊँगा।
उसकी बेगम के पास इस बात का कोई जवाब नहीं था।

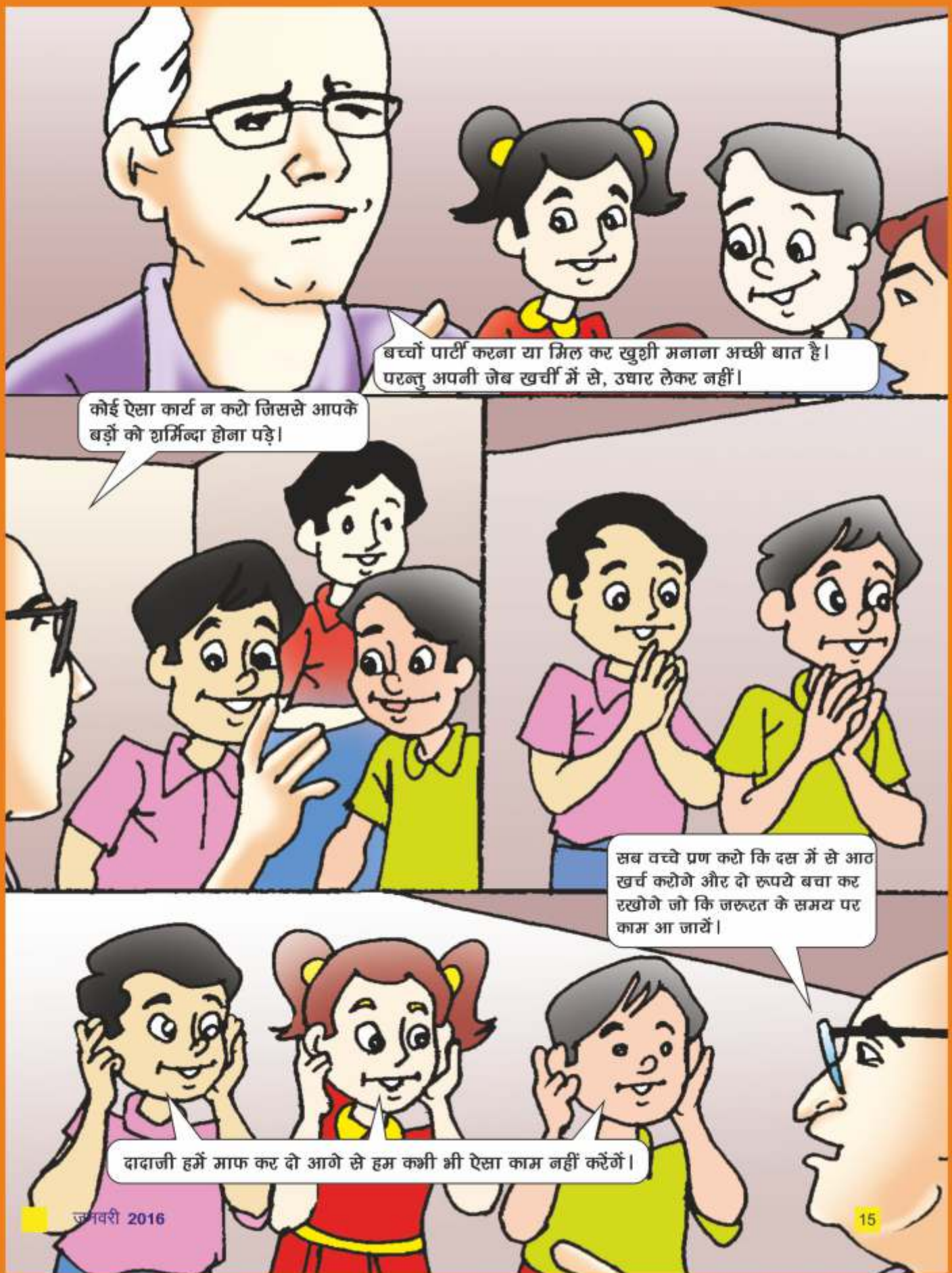
बच्चों पार्टी करना या मिल कर खुशी मनाना अच्छी बात है। परन्तु अपनी जेब खर्ची में से, उधार लेकर नहीं।
कोई ऐसा कार्य न करो जिससे आपके बड़ों को शर्मिन्दा होना पड़े।
सब वच्चे प्रण करो कि दस में से आठ खर्च करोगे और दो रूपये बचा कर रखोगे जो कि जरूरत के समय पर काम आ जायें।
दादाजी हमें माफ कर दो आगे से हम कभी भी ऐसा काम नहीं करेंगें।

समाचार

मिल गया धरती जैसा ग्रह

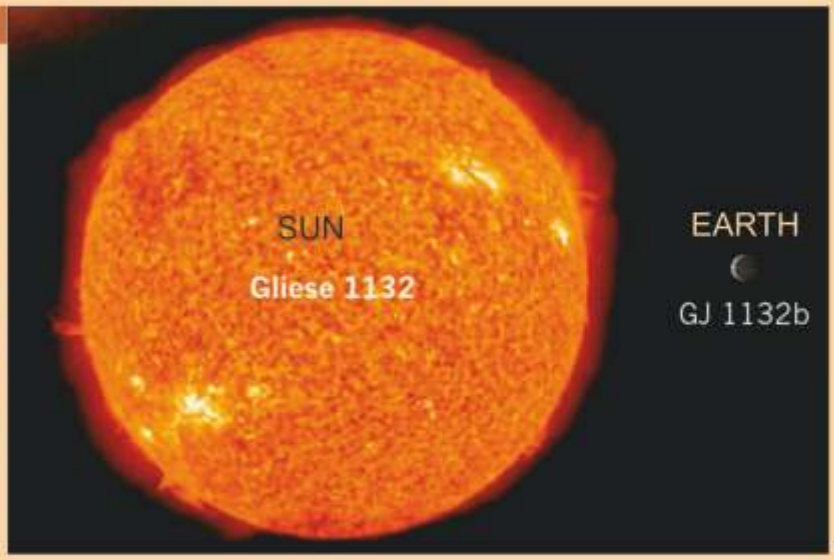

न्यूयॉर्क। वैज्ञानिकों ने हब्बल दूरबीन में एक ऐसा तारा कैद किया है जो हुबहु पृथ्वी जैसा ही है। ये ग्रह पृथ्वी से 16 गुणा बड़ा है। वैज्ञानिक इसे 'पृथ्वी 2' बोल रहे हैं और उस पर जीवन तलाश कर रहे हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि इस ग्रह पर एलियनों के रूप में जीवन हो सकता है। वैज्ञानिकों ने इस ग्रह को 'जीजे1132बी' नाम दिया है, जो सूर्य जैसे तारे का चक्कर लगाता है। इस ग्रह पर ऑक्सीजन व पर्यावरण दोनों मौजूद हो सकते हैं।

'मैरीलैंड विश्वविद्यालय' के अंतरिक्ष विज्ञानी डैरेक डेमिंग ने कहा है कि इस ग्रह की खोज अब तक की सबसे महत्वपूर्ण खोज है। उन्होंने बताया कि 'जीजे1132बी' धरती से 39 प्रकाशवर्ष दूर है। (3 लाख कि.मी. प्रति सेकिण्ड की गति से प्रकाश एक वर्ष में जितनी दूरी तय करता है उसे एक प्रकाशवर्ष कहते है।) मैरीलैण्ड विश्वविद्यालय के अंतरिक्ष विज्ञानी डैरेक डेमिंग के मुताबिक 'जीजे1132बी' का ग्रह लाल रंग का है। इसकी सतह 260 डिग्री सेल्सियस तक गर्म है। वैज्ञानिक मानते हैं कि इस ग्रह पर वे सभी चीजें मौजूद हो सकती हैं जो हमारी पृथ्वी पर मौजूद है। (एजेंसी)

मंगल पर जीवन की संभावना बढ़ी

नई दिल्ली। मंगल की खाक छान रहे अमेरिकी रोवर यान क्यूरोसिटी से मिले नये आंकड़ों के मुताबिक इस लाल ग्रह की सतह के नीचे पानी मौजूद है जिससे वहाँ जीवन मिलने की संभावना बढ़ गई है। विज्ञान पत्रिका 'नेचर' में प्रकाशित एक शोध में यह दावा किया गया है।

वैज्ञानिक लम्बे समय से मानते आए हैं कि मंगल पर बर्फ के रूप में पानी मौजूद है। शोध से जुड़े और 'कोपेनहेगन विश्वविद्यालय' के नील बोर संस्थान में मार्स ग्रुप के प्रमुख मोर्टन बो मैडसन ने बताया कि मंगल की मिट्टी में कैल्शियम परक्लोरेट पाया गया है, जो वातावरण में मौजूद वाष्प को सोखता है। उन्होंने बताया कि क्यूरोसिटी रोवर के मौसम निगरानी केंद्र के आंकड़ों से पता चला है कि मंगल में वाष्प की परिस्थितियां सर्दियों में रात को और सूर्योदय के तुरन्त बाद रहती हैं। सतह से करीब डेढ़ मीटर की ऊंचाई और सतह पर आर्द्रता और तापमान की माप के आधार पर वाष्प सोखने का अनुमान लगाया गया है। रात के समय वातावरण में मौजूद कुछ जलवाष्प पाले के रूप में सतह पर जम जाता है। कैल्शियम परक्लोरेट इसे सोख लेता है और इस तरह यह नमकीन पानी बन जाता है। इस तरह इसका हिमांक कम हो जाता है और पाला पानी में बदल जाता है। मैडसन ने बताया कि मंगल की मिट्टी भुरभुरी है और पानी आसानी से इसमें समा जाता है। मिट्टी मे मौजूद दूसरे लवण भी पानी सोखकर तरल बन जाते हैं।

संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

गुरु–वंदना

सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज की उपस्थिति में (दिल्ली में) हुए अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक सम्मेलन (समागम) में हँसती दुनिया परिवार के सदस्यों ने सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रमों द्वारा गुरु–वंदना की।

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

वर्ग पहेली

1			2	■	3
	■	■	4		
5		6		■	
■	■	7		8	■
9			■	10	
	■	11			■
12			■	■	13

बाएं से दाएं →

2. जोधपुर और कानपुर में से जो शहर राजस्थान में है।
4. राज्यसभा में कितने सदस्यों को राष्ट्रपति मनोनीत करते हैं?
5. दशहरे और दीपावली के बीच में होने वाले रामायण के मंचन को .... कहते हैं।
8. माता सीता के दो पुत्र थे – लव और .... ।
9. सिक्किम राज्य की राजधानी।
11. भारत के राष्ट्रीय झण्डे का नाम।
13. भगवान श्रीराम का जन्मस्थान।

ऊपर से नीचे ↓

1. पीतल जिनके मेल से बनता है, वे हैं : जस्ता और ... ।
2. भारतीय अभिनेत्री .... सहगल का निधन 102 वर्ष की आयु में 2014 में हुआ।
3. महात्मा गाँधी की माता का नाम .... बाई था।
6. शबरी के गुरु का नाम .... ऋषि था।
7. नालायक का विपरीत शब्द।
8. सुमति का विपरीत शब्द।
9. इलाहाबाद में .... , यमुना और सरस्वती तीन नदियों का संगम होता है।
10. जापान देश की राजधानी।
12. मुहावरा :.....में भंग पड़ना यानि मजा बिगड़ना।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में है)

प्रेरक–प्रसंग : विद्या प्रकाश

रेखा बदल डाली

पाणिनी बाल्यावस्था में मन्द बुद्धि थे। वे गुरुकुल में जो पाठ याद करते, उसे भूल जाया करते थे। एक दिन गुरुजी ने कहा, "मुझे लगता है कि तुम्हारे भाग्य में विद्या ही नहीं है।" गुरुजी हस्तरेखा विशेषज्ञ थे। उन्होंने कहा, "वत्स! तेरे हाथ में तो विद्या की रेखा ही नहीं है। फिर तू विद्या ग्रहण कर विद्वान कैसे बनेगा?"

पाणिनी ने तो विद्याध्ययन कर वेदों का विद्वान बनने का सपना संजोया था। गुरुजी के मुख से सुनकर कि हाथ की रेखाओं में विद्या की रेखा नहीं है, बालक का हृदय हाहाकार कर उठा। वह एक चाकू उठा लाये तथा बोले, "गुरुजी! विद्या की रेखा हाथ में कहाँ होती है। मैं अपने हाथ की रेखाओं को कठोर परिश्रम से बदल दूंगा।

गुरु जी ने हाथ देखकर बताया कि विद्या की रेखा यहाँ होती है।

पाणिनी ने चाकू से हाथ की हथेली पर रेखा खींच दी। उसी दिन से पाणिनी ने कठोर परिश्रम करके निष्ठापूर्वक विद्याध्ययन शुरू कर दिया। वे रात दिन ज्ञान प्राप्ति की धुन और लगन में लगे रहते। कुछ ही दिनों में पाणिनी की गणना असाधारण प्रतिभावान छात्रों में होने लगी। आगे चलकर पाणिनी व्याकरण तथा संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान बने। उनके लिखे ग्रन्थों की सम्पूर्ण संसार में धूम मची।

हँसती दुनिया पढ़ते जाएं
हँसते और हँसाते जाएं।।

गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) पर विशेष

प्रस्तुति : डॉ परशुराम शुक्ल

अधिकार और कर्तव्य

माह जनवरी छब्बीस को हम,
सब गणतंत्र मनाते।
और तिरंगे को फहराकर,
गीत खुशी के गाते।।

संविधान आजादी वाला,
बच्चों इस दिन आया।
इसने दुनिया में भारत को,
नव गणतंत्र बनाया।।

क्या करना है और क्या नहीं?
संविधान बतलाता।
भारत में रहने वालों का,
इससे गहरा नाता।।

यह अधिकार हमें देता है,
उन्नति करने वाला।
ऊँच नीच का भेद न करता,
पंडित हो या लाला।।

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई,
सब हैं भाई भाई।
सबसे पहले संविधान ने,
बात यही बतलाई।।

देश हमारा रहें कहीं हम,
काम सभी कर सकते।
पंचायत से एम. पी. तक का,
हम चुनाव लड़ सकते।।

लेकर सत्ता संविधान से,
शक्तिमान हो सकते।
और देश की इस धरती पर,
जो चाहे बो सकते।।

लेकिन संविधान को पढ़कर,
मानवता को जानो।
अधिकारों के साथ जुड़े,
कर्तव्यों को पहचानो।।

लेख : ईलू रानी

आओ, बर्फ के घर की सैर करें....

आपको जानकर अचरज होगा कि संसार का एक स्थान ऐसा भी है, जिसे 'बर्फ का घर' कहा जाता है। इस स्थान पर दूर–दूर तक बर्फ की श्वेत मोटी चादर बिछी है। यहाँ की वादियों में बर्फ की गजब की ठंडकता है। आओ, बर्फ के घर की सैर करते हैं।

हाँ, दुनिया में अंटार्कटिक महाद्वीप को ही संसार का 'बर्फ–घर' कहा जाता है। इस महाद्वीप का 98 प्रतिशत भाग सदा बर्फ से ढका रहता है। यहाँ का न्यूनतम तापक्रम 0 से –88 डिग्री सेल्सियस तक होता है। यहाँ की बर्फ की मोटाई 2 से 5 कि.मी. तक है। इस महाद्वीप के चारों तरफ विशालकाय हिमशैल तैरते दिखाई देते हैं। पूरा महाद्वीप रहस्यों तथा जोखिमों से भरा पड़ा है। दुनिया की किताब में इसे 'अंध महाद्धीप' के नाम से भी जाना जाता है। इसका क्षेत्रफल भारत तथा चीन दोनों को मिलाने के बराबर बैठता है।

बर्फीली तेज हवाओं वाले इस बंजर और निर्जन प्रदेश में गर्मियों का तापमान 4 डिग्री सेल्सियस से 20 डिग्री सेल्सियस तक रहता है। यह सामान्य तापमान कहा जाता है। इन दिनों यहाँ 24 घंटे धूप रहती है, जो कि बर्फ की चिकनी सतह से टकराकर आँखों को चौंधिया देती हैं। यहाँ कई–कई हफ्तों तक 250 से 300 कि.मी. प्रति घंटे की गति से झंझावात चलते हैं, जिनके साथ बर्फ के मोटे–मोटे कण भी उड़ते हैं। ये ठंडी और सूखी हवाएं बदन पर कांटे की तरह चुभती हैं।

इस महाद्धीप का क्षेत्रफल जाड़े के दिनों में चारों तरफ दूर–दूर तक बर्फ की सफेद चादर सी बिछी होने के कारण 'सफेद रेगिस्तान' तथा पेंगुइन के कारण 'पेंगुइन का देश' भी कहलाता है। यूं तो इसे 'नो मैन्स लैंड' भी कहा जाता है।

यहाँ बर्फ के कुछ स्थान पर काली झाड़ियां दिखाई देती हैं, जिनमें सुर्ख लाल फूल खिलते हैं। इन फूलों में बड़ी गर्मी होती है। इन फूलों को पास में रखने व सूंघने से सर्दी के कई रोग भी दूर होते हैं।

यहाँ का नजारा बड़ा दिलकश है। प्रकृति ने यहाँ की वादियों में पर्यावरण का शुद्ध चोला पहना रखा है। हर वर्ष यहाँ दुनिया के कई वैज्ञानिक आकर तरह–तरह की खोजें करते हैं।

अंटार्कटिका की श्वेत बर्फ की चादर पर कई फिल्मों की शूटिंग भी हुई है। फिल्मों के माध्यम से ही यहाँ का नजारा देखकर यह अन्दाजा लगाया जा सकता है– 'सचमुच प्रकृति का यह बर्फ–घर कितना रमणीय और अजब अनोखा है...।

वर्ग पहेली के उत्तर

1 तां	■	2 जो	ध	3 पु	र
4 बा	र	ह	■	त	■
■	■	5 रा	6 म	ली	7 ला
8 कु	श	■	तं	■	य
म	■	9 गं	ग	10 टो	क
11 ति	12 रं	गा	■	कि	■
■	ग	■	13 अ	यो	ध्या

आलेख : नीला राजपूत

मैं यूकलिप्टस बोलता हूँ

जीवन का फ़लसफ़ा भी बड़ा अजीब है। विज्ञान कहता है– शरीर के विकास के लिए ये खाओ, वो खाओ, प्रोटीन लो, विटामिन लो, कैल्शियम लो, लोहा लो....। ठीक है। फिर कहता है– जो खाया जाता है, वो लहू से मिलकर शरीर की ज़रूरतें पूरी करता है। जैसे–जैसे शरीर बढ़ेगा उसकी ज़रूरतें बदलेंगी। विज्ञान यह भी कहता है कि लहू तो रेल की तरह है। प्रोटीन आदि जो भोजन के अवयव हैं उनको लेकर स्टेशन–स्टेशन घूमता है। अपना स्टेशन आने पर जो उतरना चाहता है उतर जाता है। जो चढ़ना चाहता है चढ़ जाता है, और कुछ बैठे ही रह जाते हैं। कितनी बड़ी बात विज्ञान समझाता है, लेकिन विज्ञान मन और आत्मा को भूल जाता है।

मुझे मेरे अपनों के बिछड़ने का बहुत अफ़सोस है। शरीर को खाना तो पूरा मिल रहा है। विकास के लिए, पनपने के लिए जो चाहिए वो सब परिस्थितियां भी हैं फिर भी शरीर में जान नहीं है, सौन्दर्य नहीं है, क्यों? क्योंकि मन खुश नहीं है, आत्मा प्रसन्न नहीं है। शरीर की तरह आत्मा की भी कुछ ज़रूरतें होती हैं, भूख होती है। आत्मा का भोजन है रिश्ते, और चाहे वजह कोई भी हो, जब रिश्ते छूट जाते हैं, तब जो चोट आत्मा पर लगती है उसकी अनुभूति शरीर पर भी दिखती है। सच है रिश्तों से बढ़कर कुछ नहीं। और मेरा तो सब कुछ छूट गया था। मेरे तो सारे रिश्ते ही खत्म हो गए थे। मैं आक्रोश कैसे न करूँ? मेरी कहानी तुम भी सुन लो–

पतझड़ हो या बसन्त, गरमी और सरदी मौसम कोई भी हो। हम सब यहाँ मिलकर मनाते थे। हरियाली चारों ओर फैली थी। खिलते, मुरझाते फूलों की मधुर–मधुर सुगन्ध हवा में थी। सूर्य की पहली किरण से पहले ही सब उठ जाते थे। मोर, मैना, तोता, चिड़िया, कौआ और कबूतर अपनी–अपनी बोली में सुबह का गीत गाते थे। अब बरसों से अकेला हूँ हमेशा से ऐसा नहीं था।

सब थे यार–दोस्त, भाई–बहन, माता–पिता। सब कुछ बहुत अच्छा था। तभी न जाने कहाँ से एक दिन अचानक ऐसी आँधी आई जिसमें सब खत्म हो गया। यह आँधी हवा से नहीं थी। बादल से नहीं थी। बरसात से भी नहीं थी। यह आँधी तो कुछ खुदगर्ज़ इन्सानों की लाई हुई थी।

मैं अकेला रह गया था। मृत्यु का ऐसा ताण्डव मचा जिसने मेरा सब कुछ छीन लिया। उस दिन बड़ी–बड़ी गाड़ियां आकर खड़ी हो गई थीं। गाड़ियों में लम्बे नुकीले लोहे के तार और भारी कंक्रीट के खम्भे भरे हुए थे। बहुत सारे मज़दूरों को एक दिन भी नहीं लगा कि उन्होंने हमारे चारों ओर तारों का घेरा बना दिया। 'आम्रकुंज–आमना बिल्डर्स' के नाम का बाहर एक बोर्ड भी लग गया। आने वाले खतरे का हमें तो एहसास तक नहीं था। दो दिन बाद बड़ी–बड़ी मशीनों और धारदार औज़ारों के साथ बहुत सारे लोग फिर आये। हमारे लिए तो यह सब अनोखा था। हम कुछ समझ पाते कि हमारा दोष क्या है? हमने किया क्या है? ये कौन लोग हैं? चाहते क्या हैं? उससे पहले ही जैसे मृत्युदण्ड का फ़रमान जारी हो गया। देखते ही देखते चारों ओर चीख–पुकार। एक के बाद एक बड़े–बड़े धुरंधर वृक्ष धराशायी होते गए। जो बच गए थे उनकी भी रूह कांप रही थी। तीसरे दिन मैं और दो–चार नन्हों के सिवा कोई नहीं बचा था। नीम, आम, पीपल, गुलमोहर और न जाने कितने बड़े और छोटे लगभग सभी नीचे लेटे पड़े थे। उन पर आरियाँ चल रही थीं। कभी सोचा है तुम्हारे चारों ओर तुम्हारे दोस्त, तुम्हारे अपने, तुम्हारे गुरुजन... तुम्हारे सामने पड़े हैं टुकड़ों में कटे हुए बेहाल और तुम अकेले खड़े हो विवश और कुछ भी नहीं कर सकते उनके लिए! कल शायद मेरी बारी है। मृत्यु से भी अधिक डरावना होता है मृत्यु का इन्तज़ार। पल–पल कैसे गुज़रता है, वो ही जाने जिसके ऊपर बीतती है। सुबह–सुबह एक साहब आए, कह दिया बस बाकी को छोड़ दो और मुझे छोड़ दिया गया था। मुझे जीना नहीं था। मरना चाहता था, मैं जी कर क्या करूँगा? दो दिन में सब साफ़ हो गया। बिना आमवाले आम्रकुंज में मेरे अपनों की एक निशानी तक नहीं बची थी। चारों तरफ ईंटें, सरिये, रोड़ी और सीमेन्ट ही सीमेन्ट बिखरा पड़ा था। बस घर्र–घर्र की कर्कश आवाजें। दो साल तक यह सब सहता रहा। अन्दर ही अन्दर रोता रहा। आज बरसों से मैं अकेला एक यूकलिप्टस और मेरे चारों ओर कंक्रीट का बड़ा–सा जंगल!

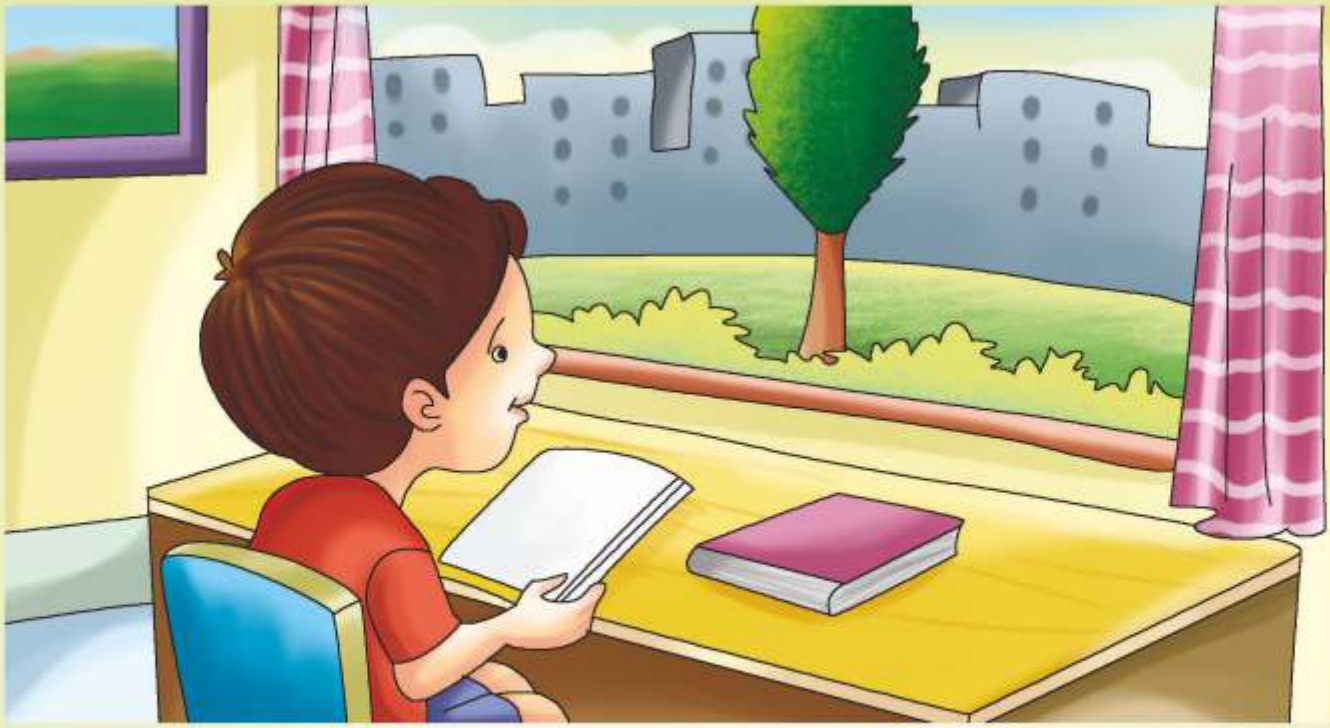

कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। फिर भी जी रहा था। दुःखी आज भी हूँ लेकिन सच ही तो कहते हैं कि समय सब ठीक कर देता है। धीरे–धीरे मेरे चारों ओर खुलती खिड़कियों से आती आवाज़ें मैं सुनने लगा। कंक्रीट के जंगल में मुझे दिलों की धड़कन सुनाई देने लगी, और मैंने ताका–झांकी करनी शुरू कर दी। अब तो जैसे इसकी आदत–सी पड़ गई है।

सामने वाली खिड़की इन्जीनियर राजेश की है। आज मैंने देखा, उसका बेटा चिन्टू खिड़की पर बैठकर जोर–जोर से कुछ पढ़ रहा है। मैंने सुना– "वृक्ष से जीवन है। वृक्ष हमें शुद्ध हवा देते हैं। उसी को ही प्राणवायु अथवा ऑक्सीजन कहते हैं। वृक्ष ही वातावरण से गन्दी वायु यानी कार्बनडाइआक्साइड को सोख लेते हैं। वृक्ष के कारण बरसात होती है। वृक्ष धरती को उपजाऊ बनाते हैं। वृक्ष से हमें भोजन, औषधि और लकड़ी मिलती है। कागज़ भी वृक्ष देते हैं, पेड़ों की हरियाली आँखों को खुशी देती है।"

यह सब सुनकर मैं तो अचम्भित रह गया। देखो तो चिन्टू क्या कह रहा है। यह राजेश ही तो है जो 'आम्रकुंज' बनाने के लिए हमारे सर्वनाश का फ़रमान लेकर आया था। इसलिए उसको देखकर तो मैं आज भी इतने बरसों के बाद भी कांप उठता हूँ। कैसी अजीब बात है! बेटा हमारे अहसानों का गुणगान कर रहा है। बचपन में राजेश ने भी यह सब पढ़ा तो होगा ही। काश! ये पाठ उसे याद होता। अरे, आज तो याद कर रहा है लेकिन बड़ा होकर यह चिन्टू भी इसे भूल ही जाएगा।

आज तो मुझे इन लोगों पर बड़ा गुस्सा आ रहा है, मैं सोचता हूँ ये लोग कितने दोग़ले हैं। बचपन में कुछ, और बड़े होकर कुछ। बड़े होकर कितनी बेरहमी से मेरे सारे साथियों को मार दिया। अब मैं अकेला करूँ तो क्या करूँ? खुली हुई खिड़की से आवाजें आती हैं। कुछ बातें अच्छी होती हैं, कुछ बुरी होती हैं। सब सुनता हूँ, अब तुम्हें भी सुनाऊँगा। मुझे तो अब यहीं जीना है। और रही मेरी बात, तो मेरे तडपते दिल से बार–बार एक ही आवाज़ आती है....

गुज़रे हुए वक्त में लौट जाने को जी चाहता है,
फिर वो हसीन लम्हें जीने को दिल चाहता है।
कभी साथ मिलकर मुस्कुराते सभी दोस्त,
आज फिर उनके साथ मुस्कुराने को जी चाहता है।

बाल कविता : राजन श्रीवास्तव

नेताजी का नाम अमर

नेताजी का नाम अमर,
किया देश के लिए समर।

क्रांति की आवाज उठाई,
आजादी की राह दिखाई।
लेकर हाथ तिरंगा प्यारा,
लगाया था जयहिन्द का नारा।

जनगण को आह्वान किया,
दिल्ली चलो ऐलान किया।
देश को हम स्वाधीन करेंगे,
फिरंगियों से नहीं डरेंगे।

नवयुवकों में जोश जगाया,
अंग्रेजों को दूर भगाया।

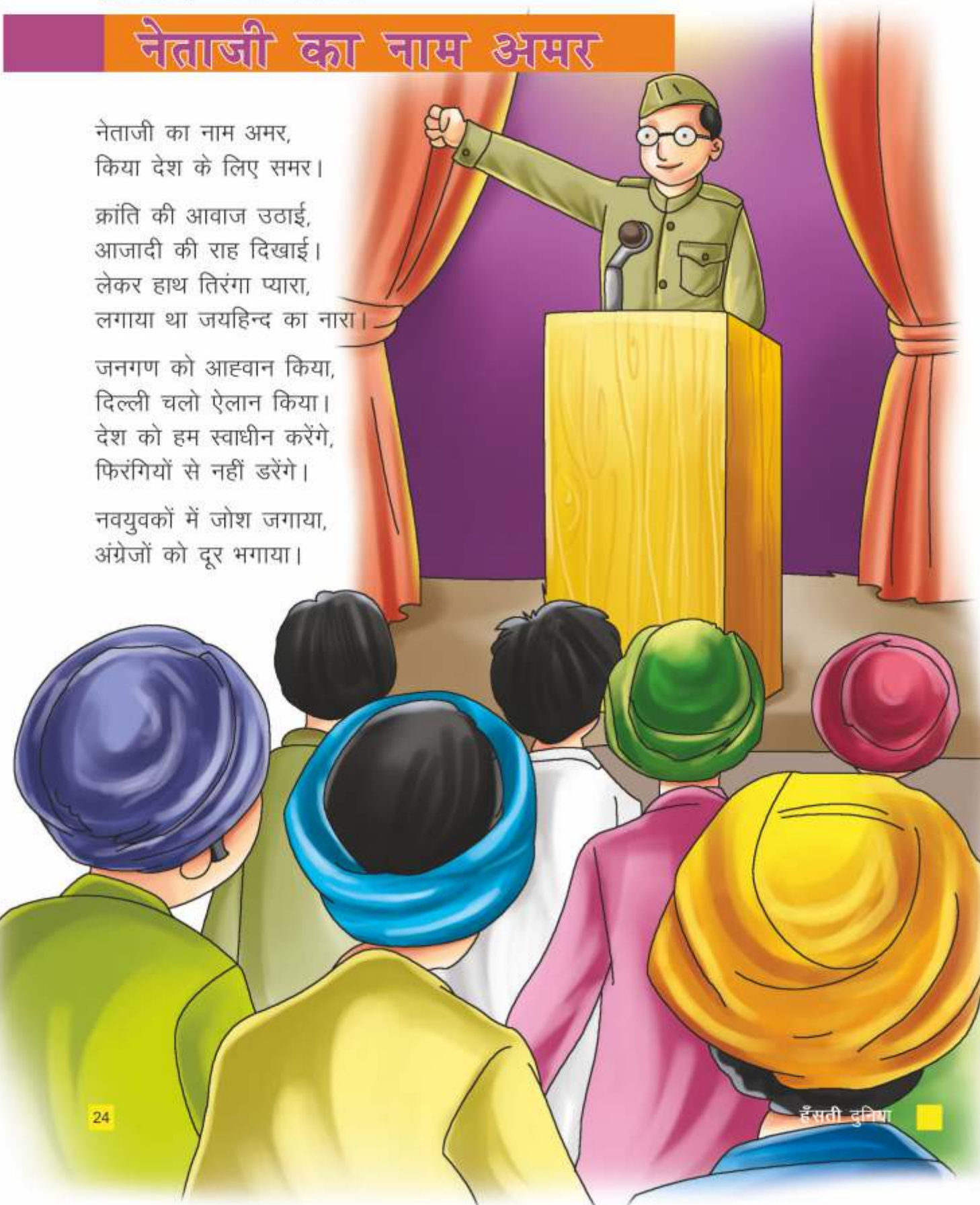

कहानी : रेनू सैनी

तीखी मिर्ची

नंदनवन में दो नन्हीं जुड़वां चींटी बहनें थीं। एक का नाम था टिन्नी और दूसरी का नाम किन्नी। टिन्नी बेहद शांत स्वभाव की थी और किन्नी अत्यंत वाचाल और बातूनी। टिन्नी शांत रहती थी। उसे किसी से मिलना–जुलना ज्यादा पसंद नहीं था। वह बहुत जल्दी गुस्सा हो जाती थी और कभी भी मीठे शब्दों में नहीं बोलती थी। वह अक्सर ऐसे शब्दों का प्रयोग करती थी जिससे नंदनवन के प्राणियों को टिन्नी तीखी मिर्ची लगती थी। अधिकतर लोगों ने जुड़वां टिन्नी और किन्नी को उनके व्यवहार के अनुसार नाम दिए हुए थे। टिन्नी को सभी तीखी मिर्ची कहते थे और किन्नी को मीठी मिसरी। दोनों को अपने–अपने यह नाम मालूम थे। लेकिन टिन्नी को तीखी मिर्ची का स्वाद नहीं पता था।

एक दिन दोनों मोटूमल हाथी के जनरल स्टोर की ओर बढ़ी। वहां पर सफेद–सफेद बहुत सारे टुकड़े पड़े हुए थे। अनेक टुकड़ों को देखकर टिन्नी और किन्नी उन्हें इकट्ठा करने लगीं। जब टिन्नी एक मीठे टुकड़े को उठा रही थी तो उसके मुंह पर टुकड़े की मिठास लग गई और उसे बेहद अच्छा अनुभव हुआ। तभी मोटूमल हाथी अपने नौकर टिंकी गधे से बोला, 'टिंकी, तू कुछ भी काम देखकर नहीं करता। तूने इतने सारे मिसरी के दाने गिरा दिए। अब नीचे गिरकर यह बेकार हो गए। इन्हें बीन कर एक ओर कर दे। जंगल के प्राणी और चींटियां इन्हें अपना भोजन बना लेंगी।' मोटूमल की बात सुनकर टिंकी ने मिसरी के टुकड़ों को एक ओर कर दिया। टिन्नी और किन्नी के साथ ही बहुत सारे चींटे और चींटियां मिसरी के दानों पर टूट पड़े। तभी टिन्नी और किन्नी की सहेली मिन्नी बोली, 'किन्नी, तुम्हें मिसरी जैसा इसलिए कहते हैं क्योंकि तुम इसी की तरह सबसे प्रेम से पेश आती हो और मीठा बोलती हो।' मिन्नी की बात सुनकर किन्नी बोली, 'और तीखी मिर्ची कैसी होती है? जरा हमें उसका स्वाद भी तो पता चले। लोग मुझे तीखी मिर्ची कहते हैं।' नन्हीं टिन्नी के भोलेपन पर मिन्नी मुस्कराते हुए बोली, 'टिन्नी तीखी मिर्ची अगर तुमसे

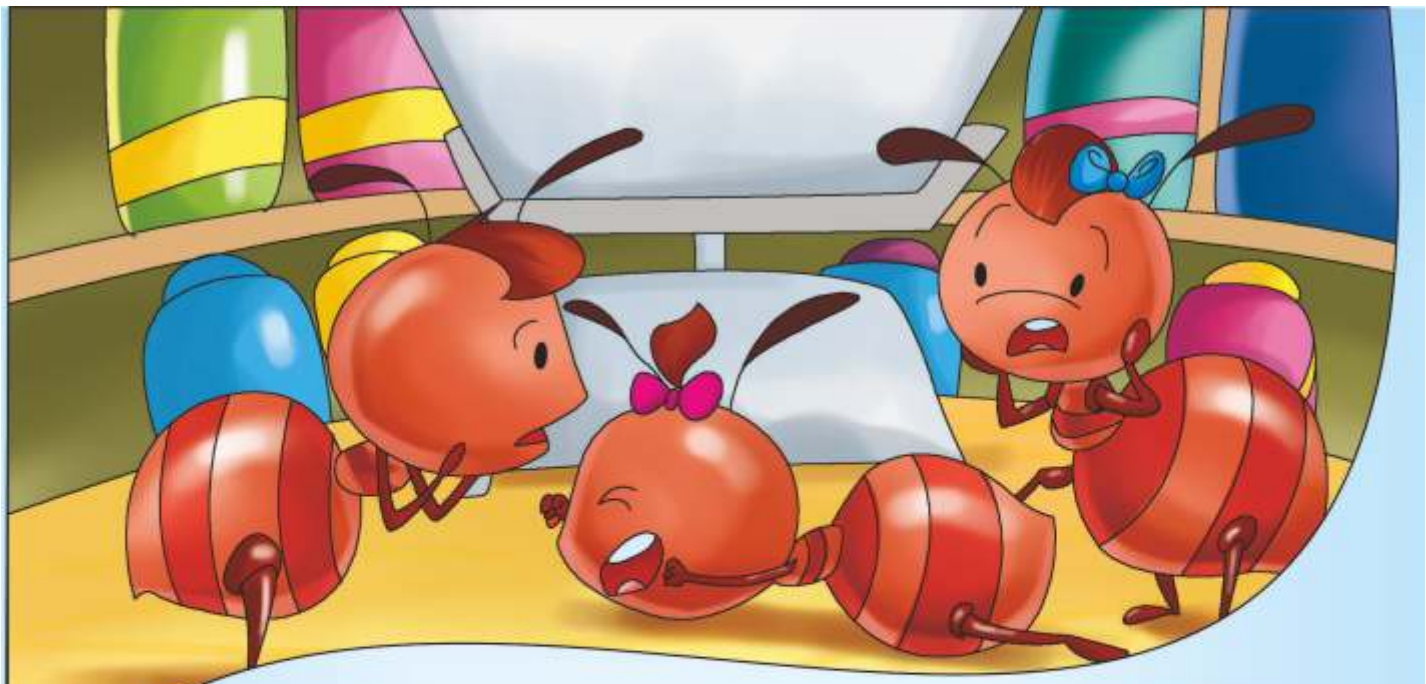

छू भी गई न तो तुम्हारा बुरा हाल हो जाएगा। चलो फिर भी तुम्हारा देखने का मन है तो मोटूमल की दुकान के अंदर चलते हैं। वहाँ कहीं न कहीं तीखी मिर्ची भी रखी होगी।' टिन्नी तीखी मिर्ची देखने का लोभ संवरण न कर सकी और मोटूमल की दुकान में घुस गई। किन्नी ने उसे मना भी किया लेकिन भला वह किसी की बात कब मानती थी? उसके पीछे–पीछे किन्नी को भी दुकान के अंदर घुसना पड़ा। तीनों मोटूमल और टिंकी की बातों पर ध्यान दे रही थीं। अभी तक कोई खरीदार तीखी मिर्ची खरीदने नहीं आया था।

तीनों निराश होकर वहाँ से जाने ही वाली थीं कि तभी चिंकी बंदर वहाँ पर आया और बोला, 'टिंकी, मुझे एक पाव तीखी मिर्च दो, आज मसाले वाले छोले–कुलचे खाने का मन है।' यह सुनकर टिंकी तीखी मिर्च लेने अंदर गया। टिन्नी, किन्नी और मिन्नी भी उसके पीछे चल दीं। थैले में डालते हुए थोड़ी मिर्च जमीन पर गिर गई। यह देखकर टिन्नी खुशी से मिर्च की ओर बढ़ी। पर यह क्या, शरीर पर जरा सी मिर्च लगते ही टिन्नी का बुरा हाल हो गया। वह बुरी तरह तड़पने लगी। किन्नी और मिन्नी यह देखकर घबरा गईं और उसे जल्दी से वहाँ से बाहर लेकर आईं। वहां उन्होंने उसके ऊपर पानी डाला। टिन्नी अभी भी खुजली और चिरमिराहट से चीत्कार रही थी। वह रोते हुए बोली, 'ओह....तीखी मिर्च तो बहुत गंदी होती है। उसने तो मेरे पूरे शरीर में तिरमिरी अग्नि सी लगा दी है। क्या मैं भी ऐसी ही हूँ? नहीं मैं नहीं चाहती कि लोग मुझे तीखी मिर्ची जैसा कहें। मैं भी किन्नी की तरह मीठी मिसरी जैसी बनना चाहती हूँ। आगे से मैं किसी के साथ भी बदतमीजी से बात नहीं करूंगी और न ही अपशब्द बोलूंगी। मुझे पता चल गया कि मिठास और प्रेम ही हर प्राणी को जीवन में आगे बढाता है।' उसकी बात पर किन्नी उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोली, 'टिन्नी तुम सही कह रही हो और फिर हम चींटियों का तो स्वभाव ही है मीठे की ओर आकर्षित होना। हम चींटियां रसोई में हमेशा मीठे की ओर ही बढ़ती हैं कभी भी मिर्च हमें आकर्षित नहीं करती। ऐसे में हमें अपने स्वभाव और कार्य के अनुरूप मीठा ही होना चाहिए।' टिन्नी बोली, 'हाँ किन्नी, अब से मैं किसी को शिकायत का मौका नहीं दूंगी और न ही किसी से तीखा बोलूंगी और न ही बोलने का मौका दूंगी।' उसकी बात पर किन्नी और मिन्नी उसके गाल पर चपत लगाते हुए बोली, 'वाह... यह हुई न तीखी...मिर्ची.....नहीं.....नहीं मीठी मिसरी वाली बात।' इसके बाद तीनों हँसने लगी और एक–दूसरे का हाथ पकड़ कर घर की ओर बढ़ चलीं।

जानकारीपूर्ण लेख : कमल सौगानी

जंगल का राजा

जंगल का राजा 'शेर' जिसे बाघ के नाम से भी जाना जाता है। इस खूंखार शक्तिशाली जानवर से आदमी ही नहीं बल्कि पशु–पक्षी भी डरते हैं। कई पशु तो इसे देखते ही अपनी भाषा में शोर मचाने लगाते हैं, ताकि उनके साथीगण तुरन्त उस इलाके से दूर चले जाएं या कहीं छिप जाएं इसी तरह कई परिन्दे भी इसे देखते ही शोर मचाने लगते हैं।

यह हमारे देश का राष्ट्रीय पशु है। इसके शिकार पर सख्त प्रतिबंध है। हमारे देश में इसकी सात प्रजातियां मौजूद हैं, जो जंगलों में ही दिखाई देती हैं। बाघ बिल्ली परिवार का ही एक भिन्न सदस्य कहलाता है। यह 7 से 12 फुट तक लम्बा होता है। इस लम्बाई में इसकी ढाई–तीन फुट की पूंछ भी शामिल है। इसका वजन 240 से 290 किलोग्राम तक होता है। कभी–कभी किसी हृष्ट–पुष्ट बाघ का वजन 300 से 310 किलोग्राम तक भी हो जाता है।

यह जीव स्तनपायी और मांसाहारी है। यह अपने से तीन गुना अधिक वजन के जानवर का शिकार कर उसे बड़ी आसानी से खींच ले जाता है, अपने शिकार को यह एकान्त में बड़े चाव से खाना पसन्द करता है। यदि कोई पशु उसमें शामिल होकर दावत उड़ाने की चेष्टा करता है तो उसे बड़ी तरकीब से खत्म कर देता है।

वैसे एक हृष्ट–पुष्ट बाघ का वजन 280 से 300 किलोग्राम तक होता है। हृष्ट–पुष्ट बाघ रात के सन्नाटे में शिकार पर निकलता है, यह शिकार कुछ खास ढंग से करता है। छोटे जानवरों को तो लपककर दबोच लेता है किंतु जंगली भैंसे, गैंडे, भालू आदि का वह नीचे से गला दबोच कर शिकार करता है।

बाघ तैरने में भी बड़ा कुशल होता है। यह गहरी से गहरी नदियों में भी आसानी से तैर लेता है। कई बार तो यह जलजीवों का शिकार तैरकर करता है। वर्षा के मौसम में बाढ़ से उफनती नदियों में भी जी भरकर तैराकी का आनन्द लेता है।

बाघ अत्यधिक गर्म देशों में नहीं पाया जाता है जैसे अफ्रीका में इसके नामोनिशान भी नहीं मिलते। एक तरह से यह जीव बिल्ली परिवार का ही एक सदस्य है। शेर, चीता, तेंदुआ, वेस्टन लेपर्ड, मिनी लॉयन इसी की भिन्न–भिन्न प्रजातियां हैं। ये प्रजातियां ऊँचे–ऊँचे घास के मैदानों, बर्फीले पर्वत, पथरीले पहाड़, जंगल, नमीयुक्त क्षेत्र, विशाल मैदानों आदि में अपना जीवन आसानी से गुजार लेती हैं।

निरन्तर शिकार व जंगलों के उजड़ने से इसकी संख्या दिन–पे–दिन घटती जा रहीं है।

बर्फ की चादर वाला देश...

आलेख : इलू रानी

दोस्तों! तुम्हें जानकर अचरज होगा। एक समय ऐसा भी था जब पृथ्वी के दक्षिणी गोलार्द्ध का अंटार्कटिका आज जैसा बर्फीला और निर्जन नहीं था, तब यहाँ एक चौड़ी और ठहराव वाली विशाल नदी बहा करती थी। करीब तीन करोड़ चालीस लाख साल पहले अंटार्कटिका क्षेत्र अपेक्षाकृत अधिक चपटा भी था। उसके बाद यहाँ धीरे–धीरे तीन मील मोटी बर्फ की चादर बिछती चली गई। वर्तमान में तो यहाँ दूर–दूर तक बर्फ ही बर्फ फैली हुई नजर आती है।

ब्रिटेन के अनुसंधानकर्ताओं ने इस संदर्भ में दो दशकों तक गहन अध्ययन कर एक ताजा शोध से यह स्पष्ट किया है कि जब पृथ्वी बहुत गर्म थी। उस समय अंटार्कटिका में गहरी खाइयों और ऊँची पहाड़ियों के बीच ही बर्फ होती थी।

भू–वैज्ञानिकों के अनुसार यहाँ 5,250 से लेकर 8200 फीट तक की गहराई वाली चट्टानें करीब तीन करोड़ चालीस लाख साल से अदृश्य हैं। ये चट्टानें अब ग्लेशियरों और बर्फ की मोटी चादरों के नीचे छिप चुकी हैं। अब इन बर्फ की चादरों की मदद से अंटार्कटिका के भविष्य का आकलन वैज्ञानिकों द्वारा किया जाएगा। ताकि भविष्य में मौसम में तेज बदलाव होने की सूरत में अंटार्कटिका के भावी मौसम का अनुमान लगाया जा सके।

वैज्ञानिक थॉमसन के अनुसार अब नये पर्यावरण माडलों की मदद से यह पता लगाया जाएगा कि भविष्य में ये ग्लेशियर पिघलकर बहें तो इनका बहाव कैसा और किस तरफ होगा? वैसे पूर्वी अंटार्कटिका के 'लबार्ट गार्डन' ग्लेशियर की बर्फ ने पिघलना शुरू कर दिया है। यह बर्फ गहराई में 3–4 किलोमीटर तक बिछी हुई है। यदि पूरी ही बर्फ पिघल जाती है, तो पानी कहाँ जाकर एकत्रित होगा और उस जगह की तबाही का मंजर कैसा होगा? वैज्ञानिक इसी गुत्थी में उलझे हुए हैं।

कई वैज्ञानिक तो इस बात को लेकर आशंकित हैं कि बड़े ग्लेशियरों के नीचे चट्टानें किस तरह गहरी और किस तरफ उभरी हुई हैं। साथ ही दो पहाड़ों के बीच की गहराई कितनी है क्योंकि बहुत पहले बर्फ से ग्लेशियर से ढकने के बाद इसका आकलन मुमकिन नहीं रहता।

और हाँ, हमेशा बर्फ से ढका रहने वाला उत्तरी ध्रुव का आर्कटिक क्षेत्र अब हरा–भरा होता जा रहा है। आर्कटिका क्षेत्र के ग्लेशियरों की बर्फ पिघलकर खत्म होती जा रही है और धीरे–धीरे वहाँ पर विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां और पेड़ उगने लगे हैं। इलाके में बर्फीले माहौल के बजाय हरियाली का नजारा भी दिखाई देने लगा है।

कविता : नवीन चतुर्वेदी

भारत है सबसे न्यारा

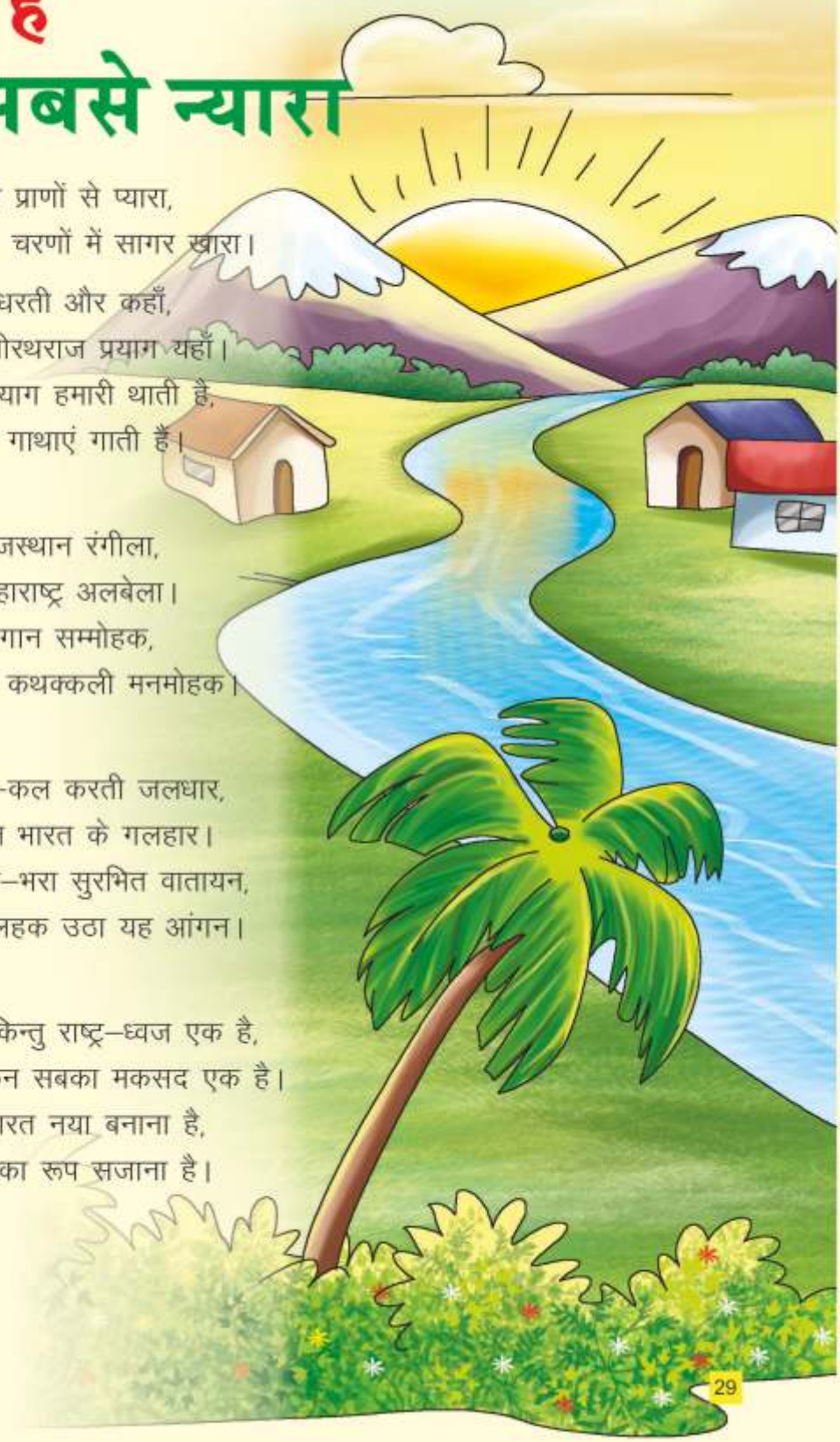

भारत है सबसे न्यारा, हमको प्राणों से प्यारा,
सिर पर मुकुट हिमालय का, चरणों में सागर खारा।

पावन गंगा नदी यहाँ, ऐसी धरती और कहाँ,
है कश्मीर स्वर्ग पृथ्वी का, तीरथराज प्रयाग यहाँ।
बलिदानों की यह वसुंधरा, त्याग हमारी थाती है,
बहती हुई समीर शहीदों की गाथाएं गाती हैं।
भारत है सबसे न्यारा...

हरा–भरा पंजाब, सुनहरा राजस्थान रंगीला,
है गुजराती शान निराली, महाराष्ट्र अलबेला।
कर्नाटक संगीत सुहाना, यक्षगान सम्मोहक,
केरल का सुंदर सागर–तट, कथक्कली मनमोहक।
भारत है सबसे न्यारा...

कृष्णा और कावेरी की कल–कल करती जलधार,
कन्नड, मलय, तेलगू, तामिल भारत के गलहार।
पूर्वोत्तर है स्वर्ग सरीखा, हरा–भरा सुरभित वातायन,
जात्रा, बाउल और बिहू से लहक उठा यह आंगन।
भारत है सबसे न्यारा...

भिन्न बोलियां, अनेक रूप, किन्तु राष्ट्र–ध्वज एक है,
मजहब, पंथ अलग हों, लेकिन सबका मकसद एक है।
राष्ट्र–धर्म है सबसे ऊपर, भारत नया बनाना है,
कश्मीर से रामेश्वर तक इसका रूप सजाना है।
भारत है सबसे न्यारा...

प्रेरक–प्रसंग : गौरी शंकर कुमार

भय

महान दार्शनिक कन्फ्यूशियस अत्यन्त भ्रमणप्रिय थे। एक बार वे घूमते–घूमते किसी अन्य देश में जा पहुँचे। वहाँ के शासक ने उनका यथेष्ट स्वागत–सम्मान किया।

सन्त कन्फ्यूशियस अभी दरबार में ही उपस्थित थे कि एक दरबारी तीन पिंजरे लेकर वहाँ आ पहुँचा। एक पिंजरे में एक चूहा बन्द था, दूसरे में बिल्ली और तीसरे में एक बाज।

बन्द पिजरें में उन तीनों जन्तुओं को अत्यन्त प्रिय लगने वाले खाद्य पदार्थ भी रखे थे। परन्तु आश्चर्य यह था कि उनमें से कोई भी खाद्य पदार्थ को नहीं खा रहा था।

दरबारी ने राजा से इसका कारण पूछा तो वह न बता सका। राजा ने सन्त कन्फ्यूशियस से उसका कारण बताने का आग्रह किया तो वे बोले, "राजन्! इसका कारण है भय। मूषक तो बिल्ली और बाज से भयभीत है। बिल्ली बाज के रूप में अपनी मृत्यु को देखकर पीड़ित है और बाज को इस आशंका के रूप में भय है कि यदि वह अपने पिंजरे में रखे भोजन की ओर ध्यान देगा तो चूहा और बिल्ली अवश्य ही भाग जायेंगे।

राजन् भय की यही विशेषता है। यह अपनी कल्पना के द्वारा अपने मन में स्वयं ही बढ़ता जाता है। ये सब तो अज्ञानी जीव–जन्तु हैं, किन्तु स्वयं को महान ज्ञानी मानने वाला इन्सान भी भय से मुक्त नहीं रह पाता। ●

प्रस्तुति : विद्या प्रकाश

बर्फ में बेफिक्र बकरी

उत्तरी अमेरिका में पायी जाने वाली पर्वतीय बकरी समुद्र तल से दस हजार फूट की ऊँचाई पर कड़कड़ाती और हाड़ कंपा देने वाली सर्दी में भी बड़े मजे से रह लेती है। इसका वैज्ञानिक नाम आरिमनास अमेरिकानस है। यह गर्मी के मौसम में खा–खाकर शरीर में इतनी अधिक मात्रा में चर्बी संचित कर लेती है कि यह जाड़े में केवल बर्फ में जमी बेरियों को ही खाकर बड़े आराम से अपना गुजारा कर सकती है। बर्फ के समान सफेद रंग के खूब मोटे फर तथा शरीर में संचित ढेर सारी चर्बी की बदौलत यह सर्दी से बिल्कुल नहीं डरती। डर तो इसे शिकारियों और सियारों से भी नहीं लगता क्योंकि अलास्का के दुर्गम हिमाच्छादित पहाड़ों पर शिकार करने का साहस शायद ही किसी आखेटक में हो। यदि कोई शिकारी इन दुर्गम पहाड़ों तक पहुँच और चढ़ सकने में सफल हो भी गया तो

उसका इन बकरियों से पार पा सकना मुश्किल है। यह बकरी उच्चावच पर्वतों पर दौड़ने तथा श्वेत वर्ण की होने के कारण छिपने में चैम्पियन है।

एक बार और इस पर्वतीय बकरी के परिवार में माँ की हुकूमत चलती है। छोटे–छोटे बच्चे झुण्ड बनाकर माँ के साथ रहते और बड़े होते हैं। ●

«विज्ञान प्रश्नोत्तरी»

प्रश्न : ओस क्यों बनती है?

उत्तर : सुबह–सवेरे घास तथा पेड़–पौधों की पत्तियों पर सुनहरी मोतियों के समान चमकती बूंदों को ही 'ओस' कहते हैं। जानते हो ओस क्यों बनती है? वायु में जलवाष्प की बूंदें सदैव उपस्थित रहती हैं। वायु में उपस्थित जल वाष्पों की इस मात्रा को नमी या आर्द्रता (Humidity) के नाम से पुकारा जाता है। रात्रि के समय घास एवं पेड़–पौधों की पत्तियों का तापमान वायु के तापमान से कम हो जाता है। जब गर्म वायु ठंडी सतह के संपर्क में आती है तो ओस के रूप में घास एवं पेड़–पौधों की पत्तियों पर जमा हो जाती है।

प्रश्न : मिट्टी के घड़े में पानी ठंडा क्यों रहता है?

उत्तर : मिट्टी के घड़े में छोटे–छोटे अनेक छेद होते हैं जिन्हें तुम नंगी आँखों से नहीं देख सकते। जब घड़े में पानी भरा जाता है तो पानी इन छिद्रों की सहायता से घड़े की बाहरी सतह पर आ जाता है जिससे वाष्पीकरण की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। वाष्पीकरण की क्रिया के कारण घड़े के भीतर के पानी का तापमान कम हो जाता है और पानी ठंडा रहता है।

प्रश्न : अम्लीय वर्षा हानिकारक क्यों होती है?

उत्तर : कारखानों और सड़क पर चलने वाले वाहनों से जो धुआं निकलता है, उसमें सल्फर डाईऑक्साइड (SO_2) तथा नाइट्रोजन ऑक्साइड (N_2O) जैसी हानिकारक गैसें होती हैं। ये गैसें वायु के ओस कणों के साथ मिलकर अम्ल द्रव्य बनाती हैं और जमीन पर गिरती हैं। इसी को 'अम्लीय वर्षा' कहा जाता है। अम्लीय वर्षा जहरीली होने के कारण पेड़–पौधों, पशुओं, जल–जीवों तथा इमारतों के लिए हानिकारक है।

जन्मभूमि की महिमा

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

महेन्द्रगढ़ राज्य में राजा विजयप्रताप राज्य करते थे। जैसा नाम, वैसा काम। वह साहसी, उदार और पराक्रमी थे। आने वाले संकटों का डटकर मुकाबला करते थे।

एक बार राजा विजयप्रताप को एक अनोखा पक्षी भेंट में मिला। पक्षी इतना खूबसूरत था कि राजा व सभासद वाह! वाह! कह उठे। वह पक्षी जब गाता था तो सब अपना काम भूलकर उसका मधुर गीत सुनने में लीन हो जाते थे।

राजा ने मंत्री को आदेश दिया कि पक्षी के लिए सोने का पिंजरा बनाया जाये। उसमें खरगोश की खाल के नरम–नरम रोये बिछाये जायें और राजा की रसोई से पक्षी के लिए भोजन की व्यवस्था की जाये। इस सुंदर पक्षी को यहाँ इतना सम्मान व आराम मिले, जितना और कहीं भी, कभी न मिला हो। यहाँ रहकर वह अपने मधुर–गान से हमें रसपान कराये।

राजा विजयप्रताप पक्षी की स्वर–लहरी का अमृतपान करते और उसके गुण की प्रशंसा करते नहीं थकते। कहते, "इसके गायन के आगे तो तीनों लोक फीके नजर आते हैं।"

अचानक एक दिन पक्षी उदास हो गया। उसने गीत गाना बंद कर दिया।

"यह तो खुली हवा में रहने का आदी है। यहाँ महल में इसे घुटन होती होगी।" विचार करते हुए राजा ने पिंजरे को बाग में टांगने का आदेश दिया।

राजा का यह बाग संसार में सबसे सुंदर था। परन्तु पक्षी यहाँ भी चुप रहा।

राजा विजयप्रताप विचार में पड़ गया, अब इसे किस बात की कमी है?

उसने महल में विद्वानों को बुलाकर उनकी राय मांगी और सबकी राय सुनकर आदेश दिया कि पिंजरे को खुले वन में ले जाकर टांग दो।

परन्तु पक्षी वहाँ भी मौन रहा।

मंत्री ने राजा विजयप्रताप को राय दी कि "पिंजरे के पक्षी को देश–देशांतर में घुमाइये। शायद कहीं यह पंछी गाने लगे।"

राजा देशाटन पर निकल पड़ा। पिंजरे के साथ देश–विदेश के कोने–कोने में गया।

आखिर वे एक पहाड़ी क्षेत्र में रूके। यहाँ दूर–दूर तक फैली पर्वतमालाएं और उनकी तलहटी में फैले हरे–भरे खेत थे। फल–फूलों से लदे वृक्षों की भरमार थी। निकट ही कल–कल करती नदी बहती थी। पहाड़ी नदी, नालों और झरनों की आवाज मधुर संगीत सुनाती–सी लगती थी। यहीं पिंजरा एक वृक्ष की डाल पर टांगा गया। उसके पास प्रहरी तैनात करके सब सो गये।

पौ फटने लगी तो पक्षी सहसा फड़का और अपने पंख फैलाकर उन्हें चोंच से साफ करने लगा।

यह देखकर प्रहरी ने राजा विजयप्रताप को जगाया।

उसी क्षण दूर क्षितिज से लाल सूरज ऊपर उठता दिखाई दिया। पक्षी तेजी से उड़ा और पिंजरे के तारों से टकराकर गिर पड़ा। फिर उसने चारों ओर उदास दृष्टि से देखा और होले से अपना गीत छेड़ा।

गीत सुनकर उसके जैसे ही सैकड़ों पक्षी चारों दिशाओं से उड़कर वहाँ एकत्रित हो गये और वे भी पिंजरे के पक्षी की तरह ही गीत गाने लगे। गीत के स्वर उदास थे।

"तो यहाँ का है, हमारा यह सुंदर पक्षी। यहाँ इसकी जन्मभूमि है।" राजा विजय प्रताप विचारमग्न होते हुए बोला। उसके चेहरे पर भी उदासी छा गई। उसे भी अपनी राजधानी की याद हो आई जिसे छोड़े हुए पूरे बारह मास हो गये थे।

"पिंजरा खोल दो और पक्षी को आजाद कर दो।" राजा ने आदेश दिया।

पिंजरे से आजाद होते ही सुंदर पक्षी ने फिर गाना प्रारंभ किया। अन्य सभी पक्षी भी गाने लगे। स्वतन्त्रता और जन्मभूमि प्राप्त करने की खुशी में पक्षी मस्ती से गा रहे थे।

तब राजा विजयप्रताप के मुँह से अनायास निकल पड़ा, "यह है जन्मभूमि की महिमा! स्वतन्त्रता का आनंद!! जहाँ जन्म होता है, बस वहीं प्रसन्नता के गीत गाये जा सकते हैं।"

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

कल तक मुझे तुम्हारा सारा काम पूरा चाहिए। जैसे भी करो।
चिंटू, क्या तुम अपनी कॉपियाँ दोगे मुझे, काम पूरा करने के लिए? नहीं तो कल मेरी पिटाई हो जाएगी।
हाँ! किट्टी, क्यों नहीं? तुम ले सकती हो। पर प्लीज़ उन्हें गंदा मत करना और न ही फटने देना।
ठीक है, चिंटू, मैं ध्यान रखूँगी। तुम जल्दी दो, मुझे काम पूरा करना है।
A for Apple

देखा किट्टी, मैंने तो पहले ही कहा था कि काम पूरा कर लो। वर्ना ये टीचर जी नहीं छोड़ेंगीं।
तुम जाओ यहाँ से मोंटू। वर्ना मुझे गुस्सा आ जाएगा। और.....
और मैं ये कॉपियाँ उठाकर फेंक दूंगी।

ये लो गई कॉपियाँ!
किट्टी, तुमने चिंटू की कॉपी भी फेंक दी। देखो, उसकी कॉपी फट गई।
अब तुम्हारी सज़ा ये है कि तुम दो कॉपी बनाओगी। एक अपनी और एक चिंटू की। और वो भी मेरे सामने बैठ कर।
ओफ्फ! मैं तो चिंटू से काम कराने की सोच रही थी। पर अब मुझे उसका काम भी दोबारा करना पड़ेगा। तभी कहते हैं कि क्रोध से बस नुकसान ही होता है। अब मैं कभी गुस्सा नहीं करुँगी।

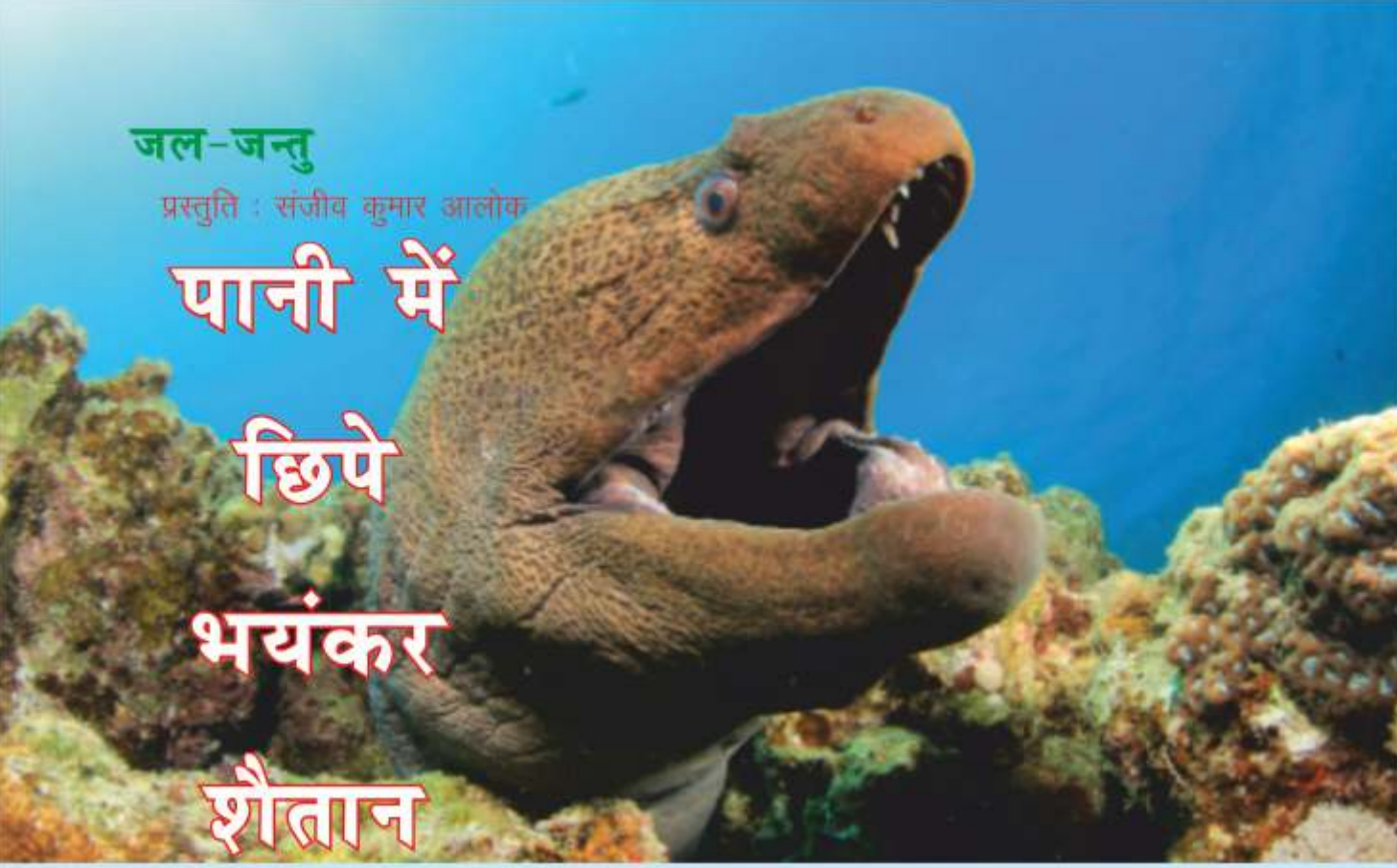

जल-जन्तु

प्रस्तुति : संजीव कुमार आलोक

पानी में छिपे भयंकर शैतान

मौसम शांत और सुहावना था। धूप महासागर पर सीधी पसरकर फैल गयी थी। ऐसे मौसम में कैप्टन मोर हाउस अपनी मोटर लांज में खड़े दूरबीन के सहारे दूर–दूर तक निहार रहे थे। एकाएक उनकी दूरबीन में काले बिंदु उभरे और वे देखते–देखते एक जहाज की शक्ल में बदल गये। अटलांटिक महासागर के जल को मथला हुआ यह जहाज जिस वेग के साथ आ रहा था उससे लगता था कि जहाज कैप्टन के नियंत्रण में नहीं है। यह देखकर कैप्टन मोर हाउस चौंक पड़े। वे एक खोज पार्टी लेकर जहाज के पास पहुँचे और रस्सों के सहारे अंदर कूद गये। इस जहाज के ऊपर बड़े–बड़े अक्षरों में लिखा था– 'मेरी सिलेस्ट'। सारा जहाज निर्जन वन–सा झांय–झांय कर रहा था। जहाज के सारे यंत्र ठीक तरह से काम कर रहे थे पर चालक दल का कहीं पता न था। जहाज की सारी वस्तुएं दुरुस्त तथा सही स्थान पर थीं। जहाज में खाद्य पदार्थ एवं पीने का पानी प्रचुर मात्रा में मौजूद था। रजिस्टर पर जहाज के बंदरगाह से चलने की तारीख 24 नवंबर 1872 दर्ज थी। जहाज के डेक के ऊपर किसी विशाल जन्तु के दांतों या शरीर के किसी अंगों द्वारा हमला किये जाने के निशान उपस्थित थे। वहीं पर खून से रंगी एक छोटी–सी तलवार भी मिली। डेक पर किसी समुद्री जंतु एवं मनुष्य के बीच द्वन्द्व हुआ हो। जहाज के इस डरावने एवं लोमहर्षक दृश्य को देखकर वहाँ मौजूद व्यक्ति सिहर उठे। इसका क्या रहस्य था? इस पर से आज तक परदा नहीं उठ सका। ऐसा अनुमान किया जाता है कि कोई भयंकर समुद्री जीव डेक के ऊपर आया था। समुद्री जीव चालक दल को मारकर समुद्र में ले गया। वह कौन–सा जन्तु हो सकता है।

कैसे-कैसे जीव

समुद्र में एक से एक भयंकर जीव रहते हैं, जो कुछ क्षणों में आदमी को मार डालते हैं। इन भयंकर जीवों में हमें कुछ का ही पता है। अन्य जीवों का पता लगाना बहुत ही कठिन है, क्योंकि वे इतनी गहराई में पाये जाते हैं कि वहाँ तक जाकर किसी आदमी का पहुँच पाना संभव नहीं है। यहाँ उन कतिपय जीवों का उल्लेख है जिनके बारे में हमें पता है। इन भयंकर जीवों में एक है 'ओरफिश', जिसे समुद्री सांप भी कहते हैं। इसकी लंबाई लगभग 30 फुट होती है। 'ओरफिश' का शरीर देखकर लगता है कि यह किसी जेली जैसी चिपचिपी चीज से बना है। प्रायः इसका रंग हल्का नीला तथा गहरी धारियां लिये होता है। इसके पंख लंबे–लंबे चप्पुओं जैसे होते हैं। शायद इसीलिए इसका नाम 'ओरफिश' पड़ गया। 'ओरफिश' ज्यादातर समुद्र के ऊपर ही तैरती है।

दूसरी तरह की एक और मछली है जिसका मुँह बहुत चौड़ा होता है। इसकी ऊपर की पर्त बहुत पतली होती है। इसके शरीर के कई अंगों से चमक निकलती है। 'ऑक्टोपस' और 'स्किवड' बड़े मुलायम जीव हैं। 'ऑक्टोपस' बिना रीढ़ वाले सबसे बड़े जीवों में गिना जाता है। 'ऑक्टोपस' और 'स्किवड' की संवेदन शक्ति बड़ी तीव्र होती है। इनके तैरने का तरीका भी विचित्र होता है। इनके अंदर एक ट्यूब होती है, जिसके द्वारा ये पानी खींचते है और बड़ी तेजी से बाहर निकालते हैं। इस क्रिया के परिणामस्वरूप इनके शरीर में गति पैदा होती है और ये आगे बढ़ते चले जाते हैं। कोई–कोई 'स्किवड' तो 92 फुट तक लंबे होते हैं ये दोनों जीव बड़े भंयकर होते हैं। इनकी दस भुजाएं होती हैं, जिनमें से दो भुजाएं बड़ी आसानी से चलती है। ये दो भुजाएं शिकार को पकड़ती हैं और अन्य आठ भुजाएं उसे मुँह तक ले जाती हैं। इनके जबड़े बड़े और दांत सींग जैसे होते हैं जिनसे ये कठोर वस्तु को भी बड़ी आसानी से चबा जाते हैं।

क्रूर जंतुओं का संसार

समुद्र की गहराइयों में कुछ ऐसे भंयकर जन्तु पाए जाते हैं जिनकी क्रूरता के बारे में कल्पना करना भी कठिन है। इनमें से एक है

'क्लैम' जो आदमी के लिए बड़ा घातक है। यह डरावना और विशालकाय जीव है। इसकी चौड़ाई चार फुट और वजन लगभग एक टन होता है। 'क्लैम' का सारा वजन उसके बाहरी खोल में होता है। यही खोल वास्तव में खतरनाक है। 'क्लैम' अपना निचला हिस्सा सदा ऊपर की ओर रखता है ताकि शिकार खोल में फंस सके।

एक मछली और है 'एंगलर'। यह अधिक ताकतवर नहीं होती, परन्तु बेहद चालाक होती है। जिस प्रकार कांटा डालकर आदमी मछलियां पकड़ने की घात में बैठता है, उसी तरह 'एंगलर' मछलियां भी दूसरी मछलियों का शिकार करने के लिए चौकन्ना बैठी रहती हैं। 'एंगलर' के सिर के ऊपर बल्ब के समान प्रकाशमय कोई चीज होती है, जो समुद्र की गहराईयों में उसे रास्ता दिखाने में मदद करती है।

'एंगलर' मछलियों की और जाति है– 'फ्रागफिश'। इनकी यह विशेषता है कि ये अपना रंग बदलती रहती हैं। कुछ इनमें पीले रंग की होती हैं, जो अपना रंग बदलकर ईटों जैसी लाल भी हो जाती है। इनके मुँह में शिकार को पकड़ने के लिए कांटा लगा रहता है। 'एंगलर' की एक और जाति भी है जिसे 'चमगादड़' जाति कहते हैं। इनके पास शिकार पकड़ने का कांटा होता है, पर वह कांटा मुँह के अंदर ऊपरी हिस्से के एक ट्यूब में छिपा रहता है। शिकार पकड़ते समय ये उसे बाहर निकाल लेती हैं। 'एंगलर' मछली गहरे एवं छिछले दोनों तरह के पानी में मिलती है, पर बल्ब उन्हीं के सिर पर होता है, जो गहरे समुद्र में होती है।

वैसे 'एंगलर' मछलियों की सारी जातियों में एक आश्चर्यजनक बात यह है कि नर एंगलर बहुत छोटी होती है। नर उम्रभर मादा के साथ चिपका रहता है। धीरे–धीरे एक समय ऐसा आता है कि नर–मादा के शरीर से हमेशा के लिए जुड़ जाता है, यानी पूर्ण रूप से पराश्रयी हो जाता है। जो कुछ मादा खाती है वही नर को मिलता रहता है। नर मात्र जनन–ऊतकों (टिशूस) का पुंज बनकर ही रह जाता है।

'एंगलर' मछलियों के लिए तैरना कठिन होता है। बड़ी मुश्किल से ये धीरे–धीरे हिलती हैं। इनके दांत बहुत तेज और अंदर की ओर मुड़े होते हैं, जिनसे ये शिकार को बड़े मजे से चबा जाती है। 'एंगलर' मछली का जीवन भर एक ही उद्देश्य है– 'खाना'। ■

कहानी : शोभा माथुर

ज़िद्दी कबूतर

महल के पास एक घना जंगल था और जंगल के बीच में एक गहरा तालाब था, वहाँ ढेरो पेड़ थे। इन सभी पेड़ों पर पंछी घोंसला बनाकर रहा करते थे।

यहीं पर एक कबूतर पीपल के पेड़ पर रहता था। सभी चिड़ियां उससे कहा करती थीं कि भाई तू यूं ही डाल पर बैठकर सो जाता है, अपना घोंसला क्यों नहीं बना लेता। मगर कबूतर ठहरा ज़िद्दी किसी की भी नसीहत उसे अच्छी नहीं लगती थी, बल्कि नसीहतों से वह चिढ़ता था।

मौसम बदला और सर्दियों की गुलाबी ठंडक ने दस्तक दी। सभी के मन मयूर नाच रहे थे। कहाँ गर्मी की भीषण चिलचिलाहट; कहाँ यह सुहावनी ठंडी हवा। बुलबुल ने देखा घोंसले के बाहर, तो मौसम उसे बहुत अच्छा लगा। वह तालाब के किनारे–किनारे नाचने लगी, नाचते–नाचते उसकी निगाह पीपल के पेड़ पर चली गयी वहाँ पर कबूतर एक डाल पर सर टिकाये सो रहा था।

बुलबुल को लगा कहीं नींद में यह गिर न जाये, वह उड़कर कबूतर के पास गई। साथ ही कॉफी व कुछ बिस्कुट भी ले गयी। 'गुड मॉर्निंग' कहकर उसने कबूतर के सामने दोनों चीजें रख दी। सर्दी धीरे–धीरे तेज हो रही थी। कॉफी पीकर तो कबूतर खुश हो गया। फिर उसने सारे बिस्कुट खा लिये।

उसका अच्छा मूड देखकर बुलबुल बोली, "भइया एक बात कहूँ बुरा तो नहीं मानोगे।"

कबूतर बोला, "मैं समझ गया तू कॉफी, बिस्कुट क्यों लाई है? जरूर मुझसे तुझे कोई काम होगा।"

बुलबुल बोली, "बहन को तो हमेशा से ही भाई से प्यार होता है इसीलिये तुझे सावधान करने आई हूँ।"

कबूतर का अहं जाग गया वह बोला, "तुम इतनी छोटी हो और तुम मुझे सावधान करने आई हो जल्दी बोलो क्या बात है?"

बुलबुल बोली, "भाई सर्दी बढ़ती ही जायेगी मैं चाहती हूँ तुम अपना अच्छा–सा घोंसला बना लो जिससे ठंड में तुम्हें तकलीफ न हो औरों की तरह अच्छी नींद लेकर तुम भी खूब नाचो गाओ।"

कबूतर बोला, "बकबक कर ली अब जाओ यहाँ से और फिर कभी मत आना थक गया मैं तुम सबकी बकवास सुन–सुनकर।

बुलबुल बेचारी दुखी मन से अपने घर आ गई। धीरे–धीरे सर्दी बढ़ रही थी। एक रात बुलबुल अपने बच्चों को लेकर सिमटी हुई घोंसले में बैठी थी तभी घोंसले में हल्का सा छेद हो गया बाहर बहुत तेज हवा चल रही थी उसी छेद से ठंडी हवा आकर सिहरन पैदा कर रही थी कुछ ही देर में ठंडक और बढ़ने लगी तथा बर्फ भी गिरने लगी।

बुलबुल ने छेद में से देखा कबूतर ठंड में सिकुड़ रहा है। बर्फ के मारे वह जमा जा रहा है। बुलबुल को फिर से दया आ गयी उसने उस अपमान को भुला दिया।

वह जोर से बोली, "भाई मेरे घोंसले में आ जाओ बाहर बहुत बर्फ पड़ रही है।"

कबूतर जानता था कि 'किसी न किसी को तो मुझ पर दया आ ही जायेगी फिर मैं क्यों मेहनत करूँ।'

'आया बहन' कहकर कबूतर बुलबुल के घोंसले में जैसे ही घुसने लगा बुलबुल का घोंसला जिसमें उसके बच्चे थे टूटकर नीचे गिर गया। कबूतर तो था बड़ा पर घोंसला था छोटा। बुलबुल के बच्चों को काफी चोट आयी।

तभी ऊपर की डाल से कोयल बोली, "देख लिया ना धूर्त और आलसी लोगों की मदद करने का नतीजा।" बर्फीली हवा का तेज झोंका आया अब बुलबुल परो से ढकती फिर रही थी अपने बच्चों को। साथ ही पछता रही थी कबूतर को सलाह देने के लिये।

बुलबुल की आदत थी सभी का भला करने की 'मगर गलत लोगों को सलाह देने से अपना ही नुकसान होता है।' बचपन में उसकी माँ ने उसे समझायी थी यह बात, जो उसे आज समझ में आई।

जन्म दिन मुबारक

रवि (फाजिल्का)

सुदिक्षा (दिल्ली)

शुभनीत (मुम्बई)

खुशी (ग्वालियर)

आयूष (दिल्ली)

महक (रायपुर)

अभिनव (कानोता)

अनीशा (दिल्ली)

देवांश (कानपुर)

मोहित (दतिया)

प्राची (रायपुर)

असीम (दिल्ली)

भावेश (श्रीमुक्तसर साहिब)

अर्पित (अजमेर)

व्योम (पुणे)

श्रेष्ठ (कानपुर)

स्तुति (कानपुर)

अर्जुन (यमुना नगर)

हार्दिक (अमरावती)

आभाष (रुद्रपुर)

पंखूड़ी (मऊ)

ऋत्विक (सिरसा)

अंजली (जामनगर)

आराध्या (पानीपत)

ध्रुव (संदौड़)

वेदांत (ठाणे)

स्पर्श (लखनऊ)

अरमान (चण्डीगढ़)

सृष्टि (कानपुर)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्पलेक्स,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपनं चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

पढ़ो और हँसो

एक बार किसी पत्रिका में विज्ञापन इस प्रकार छपा था– 'क्या आप बिल्कुल अनपढ़ हैं? पढ़ना–लिखना बिल्कुल नहीं जानते? घबराइए नहीं। हम आपकी मदद करेंगे। आप हमें अपनी खुद की लिखाई में पत्र लिखिए।'

–प्रवीण 'नखणू'

एक बच्चा पैदा हुआ और नर्स उसे नहलाने लगी तो बच्चा बोल पड़ा– सिस्टर, जरा मोबाइल देना तो।

सिस्टर : किसलिए?

बच्चा : जरा फोन करके बता दूँ कि मैं ठीक–ठाक से पहुँच गया हूँ।

टीचर : शास्त्रीय संगीत तथा डिस्को डांस में क्या फर्क है?

बच्चा : पहले में सिर हिलता है तथा दूसरे में पैर। – मुस्कान गर्ग

दादी : टिन्नी, अगर तुमने मुझे तंग किया तो मैं तुम्हें कच्चा चबा जाऊँगी।

टिन्नी : (हँसते हुए) दादी जी, आप कच्चा कैसे चबाएंगी, आपके तो दांत ही नहीं है।

एक मोटे युवक ने अपने मित्र ने कहा – मैं आजकल दौड़ने का अभ्यास कर रहा हूँ। एक बात तो बताओ पी.टी. ऊषा को तेज दौड़ने पर उड़नपरी कहते थे। मैं जब तेज दौड़ूंगा तो मुझे क्या कहेंगे?

मित्र बोला – उड़नखटोला।

– भारतभूषण शुक्ल (खलीलाबाद)

माँ : (राजू से) राजू, बाजार से गर्म मसाला ले आओ।

राजू : (वापस आकर) माँ मैंने सभी दुकानों पर मसालों को छूकर देखा कोई भी मसाला गर्म नहीं था। – प्रिया सिंह

माँ : (अपने बेटे से) नालायक पढ़ लो। तूने अपनी कोई बुक आज तक खोलकर भी देखी है...?

बेटा : हाँ माँ! मैं रोज बुक खोलता हूँ।

माँ : कौन–सी बुक...?

बेटा : फेसबुक...।

एक महिला अपनी भूलने की आदत से बहुत परेशान थी। वह अपनी सहेली से बोली– मुझे भूलने की बहुत बुरी आदत है। अगर मैं बाजार से चार चीजें लेने जाती हूँ तो दो ही लेकर आती हूँ।

इस पर उसकी सहेली बोली– मेरा तो इससे भी बुरा हाल है। अगर मैं सीढ़ियां चढ़ रही होती हूँ तो रूक कर सोचना पड़ता है कि मैं चढ़ रही थी या उतर रही थी।

लाली : अरे मोना आजकल तो तू अंग्रेजी बहुत बोलती है?

मोना : अरे दीदी पेपरों में मैंने अंग्रेजी का पूरा पेपर चबा लिया था।

–डॉ॰ राम लखन प्रजापति

अंकल : राजेश, सुना है तुम्हारे घर में नया 'बेबी' आया है।
राजेश : जी नया क्या कहते हैं आप! जब रोता है तो लगता है कि वर्षों से रोना सीखता आया है।

: मीनाक्षी आनन्द

राजेश : नवीन से, मैं असफल को सफल बना सकता हूँ, वह भी चुटकियों में।
नवीन : अरे वाह ! कैसे?
राजेश : अरे, असफल के आगे 'अ' को हटाकर।

: निष्ठा आनन्द (लुधियाना)

गुड़िया : (अमन से) भैया मैं बर्फ खाऊंगी।
अमन : गुड़िया सर्दियों में बर्फ नहीं खाते हैं।
गुड़िया : भैया, मैं बर्फ गर्म करके खा लूंगी।

: गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

दो मूर्ख एक पेड़ की डाल से लटके थे। तभी एक मूर्ख नीचे गिर गया।
पहला बोला – क्यों थक गये?
दूसरा बोला – यार थका नहीं पक गया।

कल्पना :(उपासना से) देख मोना अब बॉल नीचे नहीं आनी चाहिए वरना बॉल को मैं मम्मी–पापा के पास पहुँचा दूँगी।
मालिक :अरे! मम्मी–पापा भी बॉल खेलते हैं क्या?

नवीन : (अपने मोहल्ले के चौकीदार से) रामलाल, तुम रात को पहरा देते समय 'जागते रहो' ही क्यों बोलते हो?
चौकीदार : साहब इसलिए कि आप लोग जागते रहें और मैं सो जाऊँ।

–संजय कुमार, दिल्ली

नई सुबह

बाल गीत : रामानुज त्रिपाठी

ज्योति कलश छलका पूरब में
हँसकर धरा नहाई,
नई सुबह फिर आई।

एक नई छवि लिए गोद में,
उतरी ऊषा भरी मोद में।
और नये सूरज की नभ में
नई किरण मुस्काई,
नई सुबह फिर आई।

खिले नये फूल उपवन में,
नई गंध बस गई पवन में।
डाल–डाल पर एक नई
हरियाली फिर से छाई
नई सुबह फिर आई।

नये राग में नये तराने,
उड़कर पक्षी लगे सुनाने।
भौरों और तितलियों की फिर
रुनझुन मन को भाई
नई सुबह फिर आई।

नन्हें–नन्हें मुन्ने जागे,
चले खेलने, आलस त्यागे।
जिनकी मीठी किलकारी से
गूंज उठी अंगनाई
नई सुबह फिर आई।

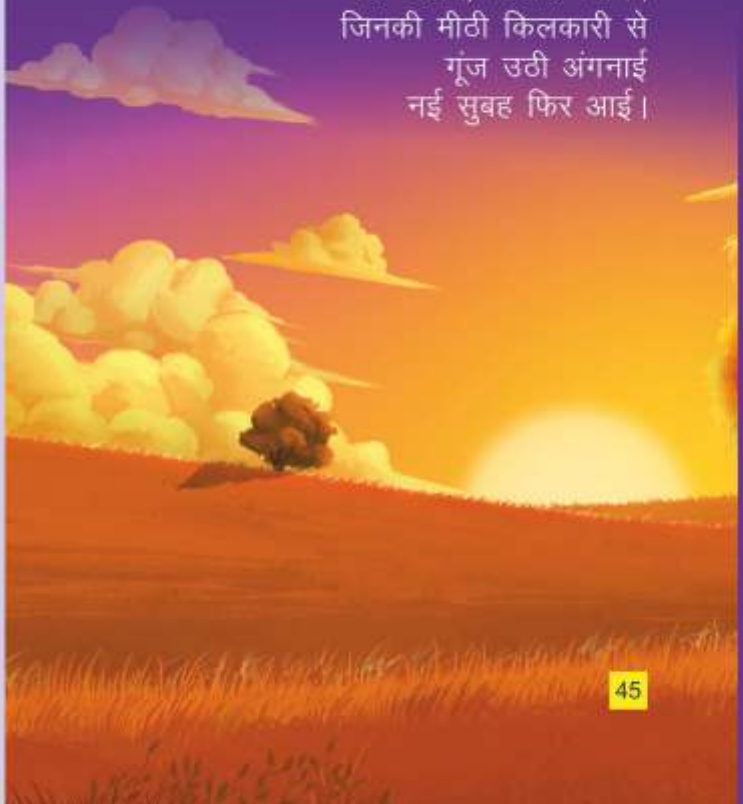

तिरंगा प्यारा है हमें

तिरंगा बाल वृद्ध और पूरे राष्ट्र की आन है।
तिरंगा प्यारा है हमें हम सब की शान है।
झुकने न देंगे इसे कहीं भी कभी भी,
तिरंगे पर हर एक भारतीय को मान है।

रंग केसरिया है प्रतीक शक्ति साहस का।
श्वेत रंग तिरंगे का सूचक है शांति सत्य का।
उर्वरता पावनता हरा रंग दर्शाये हमें,
चक्र है प्रतीक धरती पर जीवन की गति का।

पूरी शक्ति से उछाल दो गगन में उठा दो तिरंगा।
देखे सम्पूर्ण विश्व आसमान में फहरा दो तिरंगा।
कुर्बानियां बहुत दी हैं देशभक्त वीरों ने
जोश भरने दो रग–रग में ऊँचा लहरा दो तिरंगा।

देश की शान बढ़ाएंगे

हम भारत के वीर सपूत,
देश की शान बढ़ाएंगे।
सीमाओं पर बन प्रहरी,
दुश्मन को धूल चटाएंगे।

रखते हैं परमाणु शक्ति पर,
शांति प्रेम फैलाते हैं।
आँख दिखाए यदि कोई,
मिट्टी में उसे मिलाएंगे।

शांति अहिंसा प्रिय है हमको,
विश्व शांति उद्देश्य सदा।
सीना ताने गर्व से अपना,
आगे बढ़ते जाएंगे।

आपके पत्र मिले

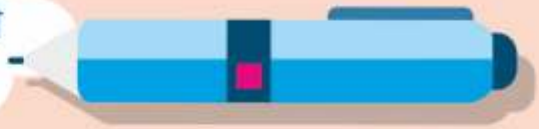

मैं पिछले तीन वर्षों से हँसती दुनिया का सदस्य हूँ। मुझे इस पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार रहता है। यह अपने स्तर की सबसे अच्छी पत्रिका है।

नवम्बर 2015 का अंक पढ़ा। सारे अंकों से नवम्बर 2015 का अंक लाजवाब था। इस अंक में वे तमाम सामग्रियां थीं जिसे हम पढ़ना ज्यादा पसंद करते हैं। इसमें छपे लेख 'रखें स्वस्थ मनोदशा', 'सम्पूर्ण अवतार बाणी', 'कभी न भूलो' बहुत अच्छे लगे।

'अपने अरमान ऊँचे रखें', 'एक अजूबा है मृत सागर' लेख भी शिक्षाप्रद व ज्ञान बढ़ाने वाले थे। 'मकड़ियों की अजब अनोखी दुनिया, 'बारहसिंगा' तथा 'मछलियां तरह–तरह' की आदि लेख भी आश्चर्यजनक रहस्य से भरपूर तथा रुचिकर थे।

– विष्णुदेव मण्डल (गनौली)

मैं हँसती दुनिया का सदस्य हूँ। मैं हँसती दुनिया का बेशबरी से इन्तजार करता रहता हूँ और पोस्टमैन से पूछता रहता हूँ।

मुझे इसमें 'कभी न भूलो', 'सम्पूर्ण अवतार बाणी' तथा इसमें प्रकाशित सब कुछ अच्छा लगता है।

मेरी प्रभु से प्रार्थना है कि हँसती दुनिया दिन दूनी, रात चौगुनी तरक्की करती रहे।

– विनोद कुमार साहू (अमरपुर)

मुझे हँसती दुनिया पढ़ना बहुत अच्छा लगता है और हमारे माता–पिता को भी हँसती दुनिया अच्छी लगती है। हँसती दुनिया से मैं जो भी सीखता हूँ। अपने दोस्तों को बताता हूँ। इसमें 'वर्ग पहेली', 'कभी न भूलो' भी शिक्षाप्रद होता है। इसमें प्रकाशित कहानियां एवं कविताएं सभी शिक्षाप्रद होते हैं।

– पुनीता सिंह

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। हँसती दुनिया बच्चों के लिए ही नहीं बल्कि बड़ों के लिए भी ज्ञानवर्द्धक है। यह बहुत हर्ष का विषय है कि इसका स्वरूप लगातार निखरता जा रहा है।

मुझे हँसती दुनिया में प्रकाशित कहानियां पढ़ना और 'वर्ग पहेली' भरना बहुत अच्छा लगता है। चित्रकथाएं ('किट्टी' एवं 'दादा जी') भी दिल को छू जाती हैं।

दिसम्बर अंक में 'सच्चा सम्मान' और 'हिम्मत की कीमत' कहानियां शिक्षाप्रद थीं।

कविताएं 'बिजली का नुकसान न हो', 'धूप का साया' और 'क्रिसमस मन जायेगा' अच्छी लगीं।

लेख 'शरीर का इंजन : जिगर' जानकारीपूर्ण था। कुल मिलाकर सम्पूर्ण अंक ही सराहनीय है।

– संजय कुमार (दिल्ली)

मैं हँसती दुनिया की नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत ही अच्छी लगती है। हर माह मैं हँसती दुनिया का इन्तजार करती हूँ।

मुझे हँसती दुनिया पढ़ना इसलिए पसन्द हैं क्योंकि हँसती दुनिया से मुझे अच्छी एवं शिक्षाप्रद सामग्री पढ़ने को मिलती है तथा हमारे ज्ञान में भी बढ़ोत्तरी होती है।

हँसती दुनिया एक ऐसी पत्रिका है जो ज्ञान से भरपूर है।

– भविता (अमृतसर)

नवम्बर रंग भरो परिणाम

प्रथम :

दीक्षा कुमारी
पुत्री/श्री संजीव कुमार
आयु 14 वर्ष
गाँव : देहरा
जिला : कांगडा (हि.प्र.)

द्वितीय :

दिव्या कोहली
पुत्री/श्री कैलाश राय
आयु 14 वर्ष
गाँव : मराण्डा
जिला : कांगडा (हि.प्र.)

तृतीय :

मान्या कपूर
पुत्री/श्री टी. आर. कपूर
आयु 7 वर्ष
215, सेक्टर 4–आर
फरीदाबाद (हरियाणा)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

शिवानी भण्डारी (आमपाटा),
गौरव कुमार गौतम (पांचूपुर),
भाविका (पंजाबी बाजार, जीन्द),
समीक्षा मेहरा (सुन्दर नगर, अजमेर),
चांदनी कुमारी (बुनियादगंज),
संयम भगत (आर्मी इन्क्लेव,
खुर्ला कींगरा),
रानू टाक (धूंधरी),
कंचन बिश्नोई, ओमप्रकाश
(4 के.एस.पी.) साक्षी (से. 40–सी,
चण्डीगढ़),
सिमरन कोहली (मराण्डा),
प्रेयल, नेहल (मूर्तिजापुर),
आयुषी मिश्रा (राजगढ़),
हितेश कोटला (निम्बूचौड़),
महक गुम्बर (ऋद्धि–सिद्धि इन्क्लेव,
श्रीगंगानगर),
अविनाश मोदी (सैपऊ),
खुशी शाक्या (भरथना),
वैभव किशोर (डांगोली बांगर),
एकता (प्रिया अपार्टमेंट, अहमदाबाद),
दक्ष (न्यू प्रेम नगर, करनाल),
हर्षिता राणा (सुरानी)।

जनवरी अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 15 जनवरी तक कार्यालय हँसती दुनिया, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय) के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) मार्च अंक में प्रकाशित किये जायेंगे। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता अवश्य भरें।

इसमें 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

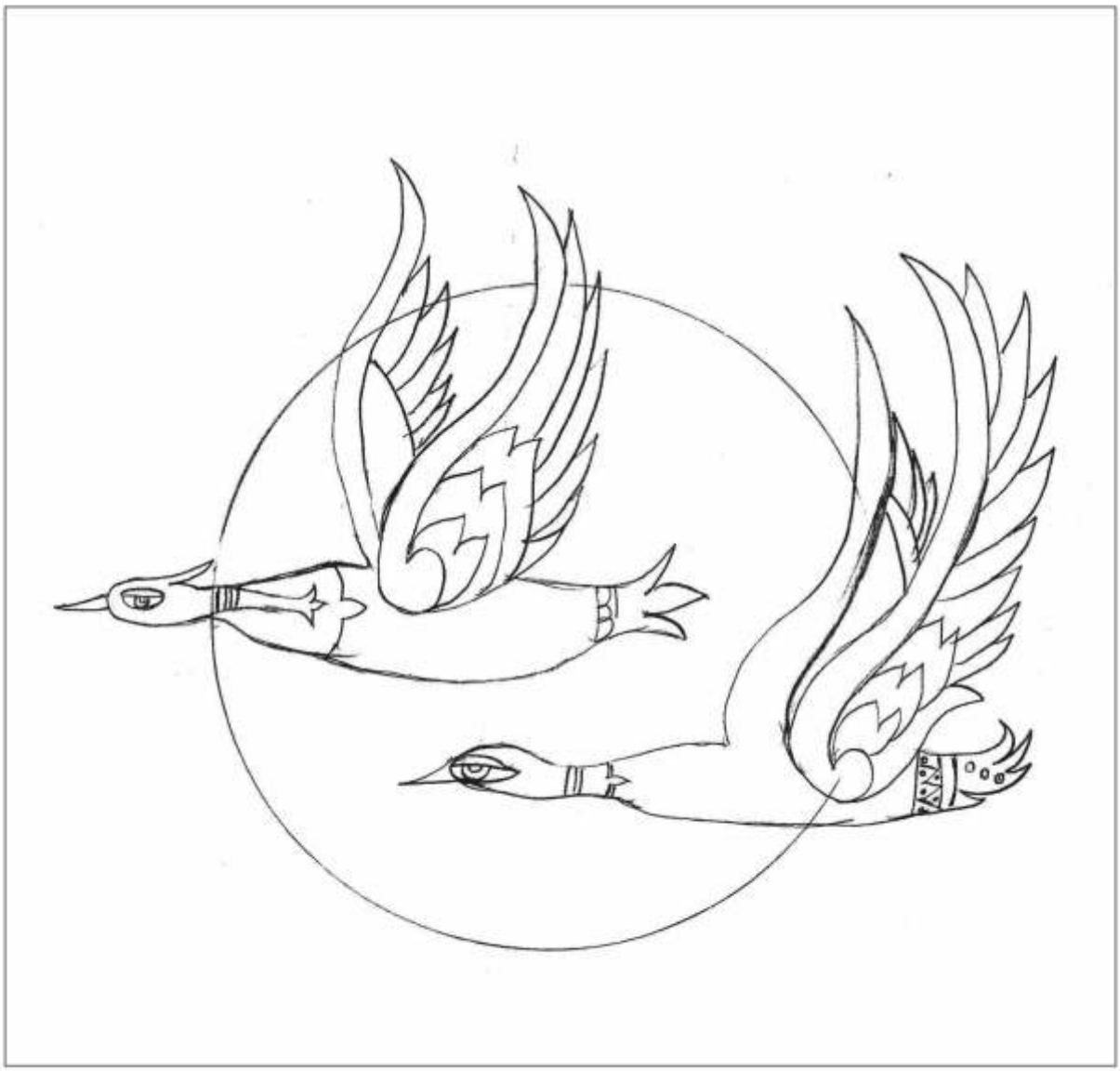

नाम ..... आयु .....

पुत्र / पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

TU HI NIRANKAR

SUPER AQUA
AN ISO 9001:2000 Certified Company.

SUPER AQUA®
R.O. System

WG®
WHITE GOLD®
AQUA FRESH
Reverse Osmosis
AN ISO 9001:2000 Certified Company.

Wholesale & Retailer of all type of **Water Purifier, Water Dispenser, R.O. System & Commercial R.O System 100 to 500 Ltr.**

Free Gift
(5Ltr. Cooker)

Free Gift
(Juicer Mixer)

Free Gift
(Toaster)

SALE-SERVICE & AMC WATER PURIFIER SYSTEM

FREE DEMO
WATER TESTING

आसान किस्तों पर उपलब्ध
0% FINANCE

for enquiry call Customer Care
09650573131
(Arvind Shukla)

स्वच्छ पानी, स्वच्छ जीवन

SATGURU HOME APPLIANCES
(Call. 09910103767)

Head office. E-1/23, Ground Floor Sec-16, Rohini Nr. Jain Bharti Public School, Delhi-110085

Mumbai office. Flat No. 302, C-Wing, Parth Complex Nr. T.V Tower, Badlapur (East) Thane, Maharashtra,

पानी की शुद्धता सेहत की सुरक्षा,
दूषित एंव खारे पानी को मिनरल बनायें

पेश है, **Super Aqua** एक ऐसा प्यूरिफायर जो न केवल आधुनिक तकनीक से पानी को स्वच्छ करता है, ब्लकि उसे फिल्टर होने के बाद लम्बे समय तक रखने के लिए सक्षम बनाता है। यह सम्भव होता है एक खास किस्म के **U.V.** चैम्बर से। जब पानी इस काटरेज से गुजरता है तो उसमें एक विशेष किस्म का बैक्टीरिया विराधक तत्व मिल जाता है जो पानी को लम्बे समय तक रखने और पीने योग्य बनाता है।

तो ध्यान रहे पीने के पानी में कोई लापरवाही न बरते, सिर्फ **SUPER AQUA** ही अपनाऐं।

MUBAI : Vorivali, Kurla, Dadar, Thane, Ulhas Nagar, Kalyan, Badlapur **MAHARASHTRA** : Pune, Aurangabad, Varsa, Nagpur, Buland, Kohlapur **SOUTH INDIA** : Hyderabad, Belgaum **UTTAR PRADESH** : Allahabad, Gorakhpur, Mathura, Agra, Kanpur, Jonpur, Lucknow, Azamgarh **UTTRAKHAND** : Dheradun, Haldwani, Rishikesh, Haridwar **PUNJAB** : Chandigarh, Hoshiarpur, Bhatinda, Patiala, Jalandhar, Ludhiana **BIHAR** : Patna, Samastipur, Darbhanga, Gaya, Bhagalpur **WEST BENGAL** : Kolkata, Sealldah **RAJASTHAN** : Jaipur, Jodhpur

Service with Humility

SANT NIRANKARI CHARITABLE FOUNDATION

ANNOUNCES

NIRANKARI INSTITUTE OF

music and arts

Courses offered Dance, Vocal and Instrumental:

- Vocal (Classical)
- Vocal (Light)
- Harmonium
- Keyboard
- Guitar
- Tabla

Affiliated to

Prayag Sangeet Samiti, Allahabad

Sant Nirankari Public School, Nirankari Colony

Email: nvc@nirankarifoundation.org

Website: www.nirankarifoundation.org

Follow us:

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : : :
Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Licence No. U (DN)-23/2015-17
Licenced to post without Pre-payment

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share your talent in form of painting, poetry & story

Posted at IMBC/1 Prescribed dates 23rd & 24th. Date of Publication: 17th & 18th (Advance Month)